भाग-II
अंक 23, वर्ष 2023-24

विश्लेषिका

(ईसा की गृह-पत्रिका)

साहित्यक एवं विविध

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
रक्षा मंत्रालय, मेटकॉफ भवन परिसर, दिल्ली-110054

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री शशि भूषण तनेजा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ईसा

मुख्य संपादक

श्री देवाशीष बैनर्जी, वैज्ञानिक 'जी' एवं उपाध्यक्ष (रा.का.समिति)

सह-संपादक

श्रीमती पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई' एवं राजभाषा अधिकारी
श्री संजय सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी' एवं सह-राजभाषा अधिकारी
डॉ. सुखजीत सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सदस्य

श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
श्री राजिन्दर कुमार, तकनीकी अधिकारी 'सी'
श्रीमती कविता धवन, निजी सचिव
श्री सुरेन्द्र सिंह रावत, प्रशासनिक अधिकारी
श्री दिनेश कुमार, भंडार अधिकारी
श्री अमित कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'
श्रीमती लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
श्रीमती डोरोथी थंगनेहोई, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
सुश्री नेहल पाण्डेय, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
श्री जय प्रकाश, प्रशासनिक सहायक 'ए'

आवरण पृष्ठ

श्री राजकुमार
(वरि. तक. सहायक 'बी')

पत्रिका में प्रकाशित लेख, लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक मंडल एवं संस्थान का इससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भाग-II
अंक 23, वर्ष 2023-24

विश्लेषिका

(ईसा की गृह-पत्रिका)

साहित्य एवं विविध

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
रक्षा मंत्रालय, मेटकॉफ भवन परिसर, दिल्ली-110054

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि **पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली** अपनी हिन्दी गृह-पत्रिका **'विश्लेषिका'** के तेईसवें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं का उद्देश्य केवल औपचारिकता की ही पूर्ति न होकर सभी को राजभाषा हिन्दी की प्रगति के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति से अवगत कराना होता है। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञान व तकनीकी विषयों से संबंधित ज्ञान निःसंदेह पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। हिंदी में तकनीकी पत्रों के प्रकाशित होने से न केवल राजभाषा का सम्मान होगा अपितु यह देश में तकनीक एवं वैज्ञानिक खोजों के प्रसार में भी सार्थक होगा। हमारा नैतिक कर्तव्य है कि वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने के साथ-साथ दैनिक सरकारी कार्यों में भी सरल हिंदी भाषा का उपयोग करें।

इस अवसर पर मैं निदेशक तथा गृह-पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लेखकों, संपादक मंडल, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और इस पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 06 मार्च, 2024

समिर कामत
(डॉ. समिर वी. कामत)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350 फैक्स/Fax : 011-23018216 ई-मेल/E-mail : secydrdo@gov.in

डॉ. सुब्रत रक्षित
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक
(प्रौद्योगिकी प्रबंधन एवं प्रणाली विश्लेषण एवं मॉडलिंग)
Dr. Subrata Rakshit
Distinguished Scientist &
Director General (TM & SAM)

रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
DEFENCE RESEARCH & DEVELOPMENT ORGANISATION

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली** द्वारा हिन्दी गृह-पत्रिका **'विश्लेषिका'** का तेईसवां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रयत्नों से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में तेजी आएगी एवं साथ ही संस्थान सरकार के कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी में काम करने की झिझक भी दूर होगी।

हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण भाव ही राष्ट्र को सफलता की उंचाइयों तक ले जाएगा। हमारा देश एक बहुभाषी देश है और यहां हर भाषा को यथोचित सम्मान प्राप्त है। हिन्दी गृह-पत्रिकाएं सरकारी कामकाज में हिन्दी को गौरवशाली स्थान दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिन्दी भाषा के माध्यम से ही वैज्ञानिक, साहित्यिक, चिकित्सा और राजभाषा से संबंधित नवीनतम लेखों और जानकारियों को जन-साधारण तक पहुंचाया जा सकता है। मैं आशा करता हूं कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख न केवल वैज्ञानिक और तकनीकी अपितु गैर-तकनीकी क्षेत्र में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए उपयोगी साबित होंगे।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से संस्थान में हिन्दीमय वातावरण का निर्माण होगा। मैं संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएं देते हुए **'विश्लेषिका'** के इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 29 फरवरी, 2024

सु रक्षित
(डॉ. सुब्रत रक्षित)

301, डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011, दूरभाष : (का) 91-11-23013476 फैक्स : 91-11-23013472
301, DRDO BHAWAN, RAJAJI MARG, NEW DELHI-110011, TELE : (O) 91-11-23013476 FAX : 91-11-23013472
ई-मेल/e-mail : dgtm.hor@gov.in

डॉ. रविन्द्र सिंह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एवं एम)

Dr. Ravindra Singh
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.शा.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated 28/02/24

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि **पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली** गृह-पत्रिका **'विश्लेषिका'** के तेईसवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इससे सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार एवं अनुपालन के प्रयासों को बढ़ावा मिलेगा। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक न केवल अपने पाठकों के लिए ज्ञान-विज्ञान से युक्त उपयोगी और ज्ञानवर्धक सामग्री लेकर आएगा बल्कि राजभाषा के प्रयोग एवं अनुपालन के क्षेत्र में संगठन की महत्वपूर्ण गतिविधियों एवं उपलब्धियों को भी उजागर करेगा।

पत्रिका के माध्यम से हमारे अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सृजन क्षमता मुखर रूप से सामने आ जाती है। इससे विचार तथा भाषा दोनों का ही संवर्धन होता है। मुझे विश्वास है कि गृह-पत्रिका **'विश्लेषिका'** में प्रकाशित वैज्ञानिक, साहित्यिक लेख, कविता एवं कहानी इत्यादि सभी पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं रोचक सिद्ध होंगे।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी इस प्रकार के सफल एवं ज्ञानवर्धक अंक नियमित रूप से प्रकाशित होते रहेंगे।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 28 फरवरी, 2024

(डॉ. रविन्द्र सिंह)

शशि भूषण तनेजा
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
निदेशक

S B Taneja
Outstanding Scientist &
Director

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान
मेटकाफ हाउस, दिल्ली - 110 054

Government of India, Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
Institute for Systems Studies & Analyses
Metcalfe House Complex, Delhi -110054

यह अत्यंत खुशी की बात है कि इस वर्ष संस्थान इसा द्वारा हिन्दी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के 23वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस वर्ष 'विश्लेषिका' को तकनीकी और साहित्यिक दो भागों में प्रकाशित करना सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के इस भाग 'साहित्य एवं विविध' में मुद्रित रचनात्मक लेखन सामाग्री जैसे कि कविताएँ, कहानी, कलात्मक चित्र और निबंध आदि हिन्दी के परिष्कृत रूप का प्रतिबिम्बन प्रतीत होती हैं। इस प्रकार का लेखन पाठक की संवेदना के विस्तार में सहायक होता है। हिन्दी साहित्य लेखन परंपरा अत्यंत समृद्ध और विशालकाय है यदि हमारे संस्थान के कार्मिकों द्वारा साहित्य लेखन में थोड़ा भी सहयोग दिया जाता है तो यह हमारे लिए गौरवपूर्ण कार्य सिद्ध होगा।

मैं इस अंक के रचनाकारों को उनके सृजनात्मक कर्म हेतु बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि विश्लेषिका का यह अंक 'साहित्य एवं विविध' सभी पाठकों को रुचिकर लगेगा। विश्लेषिका अंक-23 के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल को बधाई।

(शशि भूषण तनेजा)

दूरभाष/Tel: 011-23812639, 23816833 फैक्स/Fax: 011- 23819033 ई-मेल/E-mail: director.issa@gov.in, sbtaneja.issa@gov.in

देवाशीष बैनर्जी

वैज्ञानिक 'जी'

एवं उपाध्यक्ष (राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

मुख्य संपादकीय

विश्लेषिका के 23वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। पत्रिका के इस भाग 'साहित्य एवं विविध' में हमारे वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देते हुए ज्ञानवर्द्धक निबंध, मार्मिक कविताएँ, सूचनात्मक लेख और संदेशपरक कहानियाँ लिखीं हैं। साथ ही कार्मिकों के परिवारजनों द्वारा अर्थगर्भित व बहुअर्थी कलात्मक चित्र उकेरे गए हैं।

किसी भी देश का कलात्मक लेखन वहाँ की संस्कृति और मूल्य–बोध का वाहक होता है। यदि इस अर्थ में हिन्दी साहित्य को देखा जाए तो यहाँ कबीर, तुलसी, प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा जैसे महान साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने अपने साहित्यिक लेखन द्वारा मानवता, नैतिकता और भारतीय मूल्य–बोध को अधिक समृद्ध किया है। हमारा भी उद्देश्य मानवता और मूल्य–बोध से जुड़े कार्मिकों के सृजनात्मक लेखन को प्रकाशित करना है ताकि पाठक भावनात्मक रूप से अधिक प्रशिक्षित हो सके।

इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

देवाशीष बैनर्जी

पूनम भास्कर सिंहमार
वैज्ञानिक 'ई'
एवं राजभाषा अधिकारी

राजभाषा अधिकारी की कलम से

यह खुशी की बात है कि पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान द्वारा अपनी हिन्दी गृह–पत्रिका 'विश्लेषिका' के 23वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 23वें अंक के इस भाग में साहित्य और कला संबंधी सामाग्री का मुद्रण किया गया है।

इस अंक का मुख्य उद्देश्य संस्थान के कार्मिकों की सृजनात्मक शक्ति को उजागर करना है। तकनीकी और वैज्ञानिक लेखन से इतर साहित्य लेखन व्यक्ति की संवेदना के परिमार्जन का सशक्त माध्यम है। इस अंक में 'बच्चों का कोना' नामक भाग में मुद्रित चित्र और लेख आगामी पीढ़ी के कला और हिन्दी के प्रति प्रेम को परिलक्षित करते है। प्रकाशित सामाग्री के अध्ययन से निःसन्देह ही पाठक संवेदनात्मक स्तर पर अधिक समृद्ध होंगे।

विश्लेषिका के इस अंक को सफल रूप से प्रकाशित करने के लिए मैं अपने सम्पादन दल को बधाई देती हूँ और लेखकों से अपेक्षा भी करती हूँ कि पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता को बनाएँ रखने में अपना योगदान देते रहेंगे।

पूनम

पूनम भास्कर सिंहमार

अनुक्रमणिका

साहित्यक एवं समाजिक लेख

1. **वोकल फॉर लोकल** 01
   दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
2. **डिजिटल इंडिया में साइबर सुरक्षा और चुनौतियाँ** 04
   साहिल, तकनीशियन 'ए'
3. **जी 20 के माध्यम से भारत और विदेशों के मध्य बढ़ते मैत्री संबंध** 07
   मुकेश चन्द्र गुर्जर, वाहन संचालक 'बी'
4. **वोकल फॉर लोकल** 11
   विशाल अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
5. **प्रयोजनमूलक हिन्दी का बदलता स्वरूप** 12
   प्रवीन जैन, वैज्ञानिक 'डी' एवम् नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'
6. **एक कोशिश** 15
   पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई'
7. **बड़ों की बात मानो** 16
   सुश्री स्वीटी, तकनीशियन 'ए'
8. **जॉर्जिया देश के झंडे की उत्पत्ति** 17
   आनन्द कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
9. **गुल खिले हैं गुलशन–गुलशन** 18
   दिनेश कुमार मीना, वैज्ञानिक 'एफ'

कवितांए

10. **अपराजिता** 20
    नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'डी'
11. **भारत माँ की व्यथा** 21
    कल्पना कैथल, वैज्ञानिक 'ई'
12. **स्वस्थ जीवन के मंत्र** 22
    प्रणव कुमार, वैज्ञानिक 'ई'
13. **मोबाइल–मां** 23
    पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई'

परिवार एवं बच्चों का कोना

14. **पिता की नसीहत** 23
    नैतिक चौहान, सुपुत्र कपीश कुमार
15. **बच्चों की कलाकृति** 23

रिपोर्ट

16. **राजभाषा गतिविधियां** 25
17. **मानव संसाधन विकास रिपोर्ट** 32
18. **खेल–कूद संबंधी गतिविधियां** 35
19. **चित्र–दीर्घा** 37

वोकल फॉर लोकल

दीपिका शर्मा
तकनीकी अधिकारी 'ए'

"देख रहा हूँ आज विश्व को, मैं ग्रामीण नयन से।
सोच रहा हूँ जटिल जगत पर, जीवन पर जनमन से।।"

राष्ट्र के तीव्र विकास के लिए स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करने तथा आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 12 मई 2020 को कोविड–19 की महामारी में लगे लॉकडाउन के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत के साथ–साथ स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बनाने तथा 'स्वदेशी संघ उत्सव' को विकसित करने पर जोर दिया था। महामारी से उपजी चुनौतियों से स्पष्ट हो गया था कि 'जो आपका है वही सिर्फ आपका है'। पुनः 15 अगस्त 2020 को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा 'स्वतंत्रता दिवस भाषण' के दौरान 'वोकल फॉर लोकल' का मंत्र दिया गया था। उन्होंने कहा था कि "आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र भारत की मानसिकता 'वोकल फॉर लोकल' के लिए मुखर होनी चाहिए। हमें अपने स्थानीय उत्पादों की सराहना करनी चाहिए।"

वोकल फॉर लोकल का मूल अर्थ है स्थानीय वस्तुओं का उत्पादन, उपयोग और उन्हें प्रोत्साहन देना है। इसका मूल उद्देश्य है कि छोटे स्तर पर ही सही आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन किया जाए तथा आयातित वस्तुओं के उपयोग को कम करके स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित किया जाए और नई पहचान दी जाये। लॉकडाउन ने 'वोकल फॉर लोकल' के महत्त्व को बखूबी समझा दिया है। जब परिवहन के सभी साधन बंद थे तब स्थानीय उत्पादों की उपयोगिता एवं आवश्यकता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट हुआ, स्थानीयता का महत्त्व समझ में आया।

'वोकल फॉर लोकल' महज एक नारा नहीं है अपितु यह देश के स्थानीय उद्योगों को आगे बढ़ाने, अर्थव्यवस्था को संभालने तथा जो जहाँ है वहीं रोजगार उपलब्ध कराने का ऐसा मंत्र है जिसकी सार्थकता कोविड–19 के दौरान देखने को मिली। यह स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 1905 में चले स्वदेशी आंदोलन तथा महात्मा गांधी के स्वावलंबन व सशक्त गांव के विचार को अपने में समाहित किए हुए है। इसने 'हर हाथ रोजगार' के महामंत्र को देकर कोरोना के दौरान अर्थव्यवस्था पर आए संकट से उबरने की नई राह दिखाई।

प्राचीन व मध्यकाल में भारत ने अपने विकासक्रम में ज्ञान, विज्ञान, कला, शिल्प एवं उद्यम की ऐसी शैलियों को विकसित किया कि उसकी विशिष्ट पहचान स्थानीयता से निकलकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हुई जैसे कि सूती वस्त्र, ढाका के मलमल, भदोही के कालीन के साथ–साथ कीमती पत्थर, धातु निर्मित विभिन्न उत्पाद आदि। यह वह समय था जब पाश्चात्य विचारक व अर्थशास्त्री अफसोस जताते हुए लिख रहे थे कि यूरोपीय लोगों की भारतीय वस्त्रों और वस्तुओं के प्रति आसक्ति यूरोप को कंगाल बना रही है।

किंतु 18वीं सदी तक पहुँचते–पहुँचते यूरोपीय देश तथा ईस्ट इंडिया कंपनी ने सोची–समझी रणनीति के तहत भारत के कुटीर उद्योगों को तबाह कर दिया है। आज आवश्यकता है वोकल फॉर लोकल से लोकल फॉर ग्लोबल होने की जिससे हम अपने पुराने गौरव को पुनः स्थापित कर आत्मनिर्भर व शक्ति संपन्न बना सकें।

भारत की पहचान प्रारंभ से ही लघु, ग्रामीण व कुटीर उद्योग से रही है। वोकल फॉर लोकल से 'मेक इन

इंडिया' को एक नई ऊर्जा मिली है। वर्तमान में विश्व अर्थव्यवस्था को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि जब अमेरिका सहित विभिन्न देश संरक्षणवादी नीति अपनाने लगे हैं तो हम अपने अंदर की संभावनाओं को पहचानें तथा अपनी निर्मिति स्वयं करें। भारत की 68-84% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है अतः सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग की सहायता से आत्मनिर्भरता हासिल की जाए। ये उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं।

'वोकल फॉर लोकल', 'मेक इन इंडिया' तथा 'आत्मनिर्भर भारत' परस्पर एक दूसरे से जुड़े हैं, अनुपूरक हैं। आत्मनिर्भरता का सीधा संबंध गुणवत्ता से है। केंद्र द्वारा अनुसंधान, श्रम और लगन से गुणवत्तापूर्वक उत्पाद को बढ़ावा दिया जा रहा है जिससे एक ओर हमारी आयात पर निर्भरता खत्म हो और दूसरी ओर स्थानीय भारतीय उत्पादों की विश्व भर में माँग बढ़े और हम विश्व अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण निर्यातक देश बन सकें। इससे स्थानीय बाजार विकसित होगा तथा लोगों को रोजगार मिलेगा, धीरे–धीरे स्थानीय बाजार अपनी स्थानीय पहचान निर्मित करेंगे और स्थानीय उत्पादों के निर्यात हेतु अग्रसर होंगे, महंगाई कम होगी तथा स्थानीय व्यवसायी बुनकर, कारीगर इत्यादि के साथ–साथ किसानों का जीवन स्तर ऊँचा होगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होगी।

दीपावली व होली के दौरान 'वोकल फॉर लोकल' का सकारात्मक प्रभाव देखा गया। चीन निर्मित मूर्ति, इलैक्ट्रॉनिक, झालर, रंग और कई अन्य उत्पादों की बजाय स्थानीय स्तर पर निर्मित उत्पादों की रिकॉर्ड स्तर पर बिक्री हुई। इससे यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस पहल से अन्य त्योहारों सहित सामाजिक समारोहों में स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा जिससे स्थानीय उत्पाद ब्रांड बनने की ओर अग्रसर होंगे तथा भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेंगे। जैसे कि विश्व के प्रमुख ब्रांड भी कभी न कभी स्थानीय ब्रांड हुआ करते थे। वे वैश्विक ब्रांड तभी बन पाए जब स्थानीय लोगों ने उनके उत्पादों का उपयोग किया और प्रोत्साहित किया अतः जरूरत है कि हम अपने स्थानीय उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित करें और पहचान दें।

चुनौतियाँ

कई कारणों से स्थानीय उद्योगों के आगे बढ़ने की राह कभी आसान नहीं रही। उपभोक्ता पहले से ही ब्रांडेड उत्पाद खरीदना पसंद करते हैं। यहाँ के लोगों में विदेशी उत्पादों के प्रति एक आकर्षण मौजूद है। व्यापारी भी गुणवत्ता का गुणगान करते हुए बेहतरी लोक उत्पादों को खारिज कर देते हैं। इस प्रकार बाजार व उपभोक्ता की निम्न सोच स्थानीय उत्पादों को आगे नहीं बढ़ने देती। हमें यह ध्यान रखना चाहिए –

"रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजे डोरि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करै तरवारि।।"

स्थानीय उत्पादों की मुनाफाखोरी व बेईमानी भी एक बहुत बड़ी बाधा है। उत्तर प्रदेश में स्थानीय मसाला उत्पाद में लकड़ी की भूसी समेत अन्य अखाद्य पदार्थ मिलने का मामला, उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर में आधा दर्जन कंपनियों के सेनेटाइजर के सैंपल फेल होना, ये चिंता का विषय है कि इन लोगों ने घटिया सामग्री उत्पादन करने का अपराध तो किया है किंतु उससे अधिक गंभीर इसलिए क्योंकि इसने 'वोकल फॉर लोकल' के उद्देश्य पर चोट की है।

घरेलू बाजार में बड़े पैमाने पर चीनी उत्पादों की उपलब्धता, आधारभूत ढाँचे का अभाव, निवेश की कमी, विदेशी ब्रांड से प्रतिस्पर्धा, तकनीकी संसाधनों का अभाव एवं स्थानीय उत्पादकों में बाजार की समझ का ना होना, 'वोकल फॉर लोकल' की राह में सबसे बड़ी बाधा है। इसके बावजूद पिछले एक साल में मध्य भारत के कुल निर्यात

में 33% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है।

पूर्वोत्तर से बर्मी अंगूर, त्रिपुरा से कटहल, नागालैंड से मिर्चा, कानपुर से जामुन, ब्रिटेन, ओमान और संयुक्त अरब अमीरात को भेजा गया। कश्मीर की मिश्रीचेरी को दुबई, हिमाचल प्रदेश के सेब को बहरीन, असम से 40 मेट्रिक टन लाल चावल अमेरिका तथा छत्तीसगढ़ से महुला पहली बार फ्रांस भेजा गया। इस प्रकार के अन्नदाता विश्व स्तर पर दस्तक देकर स्थानीय उत्पादों के स्वाद का विश्व को ऋणी बना रहे हैं। 'वोकल फॉर लोकल' का प्रभाव है कि आज प्रमुख कंपनियाँ अपनी रणनीति और अभियानों में स्थानीयता को महत्त्व देने लगी है।

संभावनाएँ

उत्पाद की गुणवत्ता अच्छी हो तो उपभोक्ता अधिक कीमत चुकाकर भी उसे खरीदना पसंद करते हैं। ध्यातव्य है कि स्थानीय उत्पाद बाजार में अपनी पहचान तभी बना सकते हैं जब उपभोक्ता पर अपनी छाप छोड़े। किसी भी उत्पाद की छाप उसके प्रति मुखर लोगों की संख्या से नहीं अपितु उसकी गुणवत्ता से तय होती है।

स्थानीय उत्पाद परंपरा, संस्कृति, भौगोलिक विशेषता और पहचान का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे – वाराणसी की रेशमी साड़ियाँ, लखनऊ की चिकनकारी, गोरखपुर की टेराकोटा की मूर्तियाँ, चंदौली का काला नमक चावल, मधुबनी की पेंटिंग, पश्चिमी बंगाल के जूट उत्पाद आदि परंपरा और पहचान को आज भी बयां कर रहे हैं।

'वोकल फॉर लोकल' से समाज के प्रत्येक आर्थिक व सामाजिक गतिविधि के बीच परस्पर निर्भरता बढ़ी है, जिससे देश में संगठित व कुशल श्रमशक्ति के विकास के साथ–साथ रोजगार का सृजन हुआ है। प्रतिस्पर्धा का माहौल बना है तथा उत्पादों की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है।

"ले दे के अपने पास फकत इक नजर तो है।
क्यूँ देखे जिंदगी को किसी की नजर से हम।।"

डिजिटल इंडिया में साइबर सुरक्षा और चुनौतियाँ

साहिल
तकनीशियन 'ए'

डिजिटल इंडिया और साइबर सुरक्षा दोनों ही हमारे देश के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं। डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक मुहिम है, साथ ही हमारे देश में साइबर सुरक्षा का होना बहुत आवश्यक है।

डिजिटल इंडिया

डिजिटल इंडिया भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक महत्त्वाकांक्षी अभियान है, जिसका मूल उद्देश्य देश के हर विभाग को एक कड़ी से जोड़ना है और वह कड़ी है देश की डिजिटल डाटा सिस्टम की कड़ी जो काम की गति को बढ़ाने में सहायता करती है। डिजिटल इंडिया एक अभियान है जो देश को डिजिटल सशक्त सोसाइटी में बदल सकता है और भारत को एक नया रूप दे सकता है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा 1 जुलाई 2015 को डिजिटल इंडिया अभियान की शुरुआत की गई थी। सरकार द्वारा इस अभियान को 2019 को पूरे भारत में डिजिटल सुविधाएँ प्रदान करने की योजना बनाई गई थी। इस योजना के अनुसार ग्रामीण स्थानों में तेज इंटरनेट की सुविधा प्रदान की जाएगी। भारतदेश डिजिटल इंडिया से बहुत दूर है क्योंकि अधिकतर लोग ऑनलाइन सेवाओं पर भरोसा नहीं करते इसीलिए भारत सरकार ने इस मुहिम को शुरू किया है।

डिजिटल इंडिया का उद्देश्य

इस अभियान का उद्देश्य इंटरनेट के माध्यम से देश में डिजिटल क्रान्ति लाना है साथ ही इंटरनेट को सशक्त करके देश के तकनीकी पक्ष को मजबूत करना है। इसका उद्देश्य भारत में अधिक से अधिक सेवाएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराना है जिससे देश का आर्थिक विकास बढ़ेगा। देश की डिजिटल रूप से विकसित करने और देश के आईटी संस्थान में सुधार करने के लिए, डिजिटल इंडिया महत्त्वपूर्ण पहल है।

डिजिटल व्यवस्था की कई सेवाएँ आज देश में उपलब्ध हैं जैसे – ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, शिक्षा के लिए आवेदन करना, मेडिकल जाँच, आधार कार्ड की मदद से लोगों को भारतीय नागरिकता की पहचान मिलना आदि।

डिजिटल इंडिया का प्रमुख उद्देश्य देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नये कीर्तिमान गढ़ना है। डिजिटल इंडिया के माध्यम से इंटरनेट की स्पीड का स्तर बढ़ गया है कम्प्यूटर, इंटरनेट इन्हीं सबसे साइबर सुरक्षा का विषय जुड़ा हुआ है।

साइबर सुरक्षा

साइबर सुरक्षा तकनीकी शब्द, सूचना सुरक्षा से जुड़ा है। साइबर सुरक्षा कम्प्यूटर, नेटवर्क, प्रोग्राम और डेटा को अनपेक्षित, परिवर्तन या विनाश से बचाने पर केंद्रित है। इंटरनेट से जुड़ी सुरक्षा के लिए साइबर सिक्योरिटी का इस्तेमाल किया जाता है। साइबर सिक्योरिटी आपके इंटरनेट, सॉफ्टवेयर और डिवाइसेस के फाइल चोरी होने से, हैक होने से बचाता है। आज के समय में हैकिंग वगैरह बढ़ गई है, साइबर सिक्योरिटी से आप बेफिक्र होकर अपना डेटा इंटरनेट में सेव कर सकते हैं। साइबर अपराधियों से अपने डेटा को सुरक्षित रखने का ये बहुत ही अच्छी तकनीक है।

साइबर सिक्योरिटी के फायदे

साइबर सिक्योरिटी से बचने से बहुत फायदे हो सकते हैं। हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों के अन्तर्गत ये नेटवर्क सिक्योरिटी बहुत सारी है जिससे आपकी नेटवर्क को सुरक्षा प्रदान की जाती है।

एप्लीकेशन सिक्योरिटी

एप्लीकेशन सिक्योरिटी से हम अपने ऐप को सुरक्षित रख सकते हैं। इस सुरक्षा में पहले दांव में पासवर्ड लगाया जाता है जो सिर्फ ऐप इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति को ही पता होता है जिससे ऐप की जानकारी सुरक्षित रहती है।

नेटवर्क और गेटवे सिक्योरिटी

आउटगोइंग और इनकमिंग दोनों नेटवर्क सुरक्षा से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का काम ये सिक्योरिटी करती है।

नेटवर्क एक्सेस कंट्रोल

नेटवर्क एक्सेस कंट्रोल एक नेटवर्क से जुड़ने की काफी आसान और सुरक्षित प्रक्रिया है। इसमें यूजर के नेटवर्क से जुड़ने के अधिकार को सीमित किया जा सकता है। इस सिक्योरिटी के साथ यूजर की पॉलिसी बना दी जाती है।

ई–मेल सिक्योरिटी

ईमेल में कई सारी जानकारियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाई जाती है। स्पैम फिल्टर और सॉफ्टवेयर के उपयोग से इसे आसानी से सुरक्षित किया जा सकता है।

एंटीवायरस और एंटी–स्पाइवेयर सॉफ्टवेयर

इंटरनेट का सबसे ज्यादा उपयोग कंप्यूटर में किया जाता है और कम्प्यूटर की सुरक्षा के लिए एंटीवायरस का होना बहुत जरूरी है। हमसे कम्प्यूटर में वायरस से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। साइबर अटैक से बचने के लिए हमें अपने डिवाइस में अच्छे से अच्छा पासवर्ड लगाना चाहिए इससे आपकी डिवाइस सुरक्षित रह सकती है।

साइबर अपराध

यह शब्द जिसमें फिशिंग, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, अवैध डाउनलोडिंग, औद्योगिक जासूसी, चाइल्ड पोर्नोग्राफी, घोटाले, साइबर आतंकवाद, वायरस का निर्माण, स्पैम आदि शामिल हैं। भारत में निम्नलिखित प्रकार के साइबर अपराध होते हैं –

- **साइबर स्टॉकिंग** – साइबर स्टॉकिंग एक व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से परेशान करती है, यह व्यक्ति के निजी जीवन में गुप्त रूप से नजर रख के संकट और भय पैदा करने के लिए किया जाता है इसीलिए इसे कभी–कभी 'मनोवैज्ञानिक आतंकवाद' भी कहा जाता है।
- **सलामी अटैक** – सलामी साइबर हमले में साइबर अपराधी बड़ी रकम बनाने के लिए कई बैंक खातों से बहुत कम रकम में पैसे चुराते हैं।
- **ई–मेल बमबारी** – इस तरह के साइबर हमले में अपराधी एक व्यक्ति को भारी मात्रा में ई–मेल भेज कर पैसे, ब्लैकमेलिंग या किसी विशेष संदिग्ध लिंग में क्लिक करने को बोलेंगे जब वह व्यक्ति लिंग में क्लिक करेगा तो उसके अकाउंट से पैसे चले जाएंगे। अपराधी ई–मेल भेजता है जो जाने–माने और भरोसेमंद पते से आता है और आपकी वित्तीय जानकारी जैसे – बैंक का नाम, खाता संख्या या पासवर्ड मांगता है। इस तरह फिशिंग प्रयासों के लिए यह आम बात है, फिशिंग एक कपटपूर्ण प्रयास है जो ई–मेल के माध्यम से किया जाता है।
- **पहचान की चोरी** – यह एक प्रकार की धोखाधड़ी है जिसमें व्यक्ति किसी और के होने का दिखावा करता है और किसी और के नाम से अपराध करता है।

इसके अतिरिक्त स्पूफिंग, वाइरस, ट्रोजेन हॉर्सेज जैसे बहुत सारे अपराध भारत में मौजूद हैं। हमको साइबर सुरक्षा की जरूरत जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ती है।

चुनौतियाँ

भारत जैसे बड़े और विकासशील देश में साइबर सुरक्षा को लेकर निम्नलिखित चुनौतिया हैं –

- **खराब साइबर सुरक्षा अवसंरचना** – भारत के बहुत कम शहरों में साइबर अपराध सेल्स हैं और भारत में समर्पित साइबर न्यायालयों की स्थापना भी बहुत कम है।
- **जागरूकता की कमी** – कम जागरूकता या उत्पीड़न के डर से लोग साइबर अपराधों की रिपोर्ट नहीं करते हैं।
- **हाल के साइबर हमले** – रैंसमवेयर हमले अधिक बारंबार और नुकसानदेह होते जा रहे हैं, जहाँ 75% से अधिक भारतीय संगठनों ने इस तरह के हमलों का सामना किया है और ऐसे प्रत्येक उल्लंघन में औसतन 35 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है।
- **गुमनामी** – साइबर स्पेस व्यक्तियों को एन्क्रिप्टिंग टूल का उपयोग करके किसी की प्रोफाइल को छुपाने या गलत तरीके से प्रस्तुत करने की अनुमति देता है।
- **क्षेत्राधिकार संबंधी चिंता** – साइबर अपराध में, एक व्यक्ति दुनिया में कहीं भी दूरस्थ स्थान पर बैठकर अपराध कर सकता है। इससे देश के बाहर बैठे अपराधी को पकड़ने में बहुत समस्याएँ आती हैं।
- **पुरानी रणनीतियाँ** – भारत की राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति जिससे एनसीसी द्वारा मसौदा तैयार किया गया है – राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति 2013 के लिए एक बहुत जरूरी अद्यतन अभी तक जारी नहीं किया गया है।
- **अधिकारियों में साइबर कौशल और प्रशिक्षण की कमी** – जिन कानून प्रवर्तन एजेंसियों को साइबर जाँच करने की आवश्यकता होती है, उनमें अक्सर अपेक्षित साइबर कौशल और प्रशिक्षण की कमी होती है।
- **साइबर संघर्ष से निपटने के लिए अनुचित दृष्टिकोण** – भारत ने अभी तक किसी भी एक सिद्धांत को स्पष्ट रूप से स्पष्ट नहीं किया है जो साइबर संघर्ष के लिए अपने दृष्टिकोण को समग्र रूप से प्रदर्शित करता हो।
- **राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति 2020** – यह अधिक कड़े ऑडिट के माध्यम से साइबर जागरूकता और साइबर सुरक्षा में सुधार लाने की इच्छा रखता है।
- **राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र** – सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के तहत स्थापित यह संरक्षण केंद्र नोडल ऐजेंसी के रूप में कार्य करता है।
- **साइबर सुरक्षित भारत पहल** – इसे वर्ष 2018 में साइबर अपराध के बारे में जागरूकता का प्रसार करने और सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए सुरक्षा उपायों हेतु क्षमता निर्माण करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।
- **साइबर स्वच्छता केंद्र** – कार्यक्रमों का पता लगाने और ऐसे कार्यक्रमों को हटाने के लिए मुफ्त उपकरण प्रदान करने के लिए साइबर स्वच्छता केंद्र शुरू किया गया।
- **साइबर सुरक्षा से जुड़े भारतीय कानून** – भारत सरकार ने कुछ वर्षों में साइबर अपराधों की तरफ ध्यान देते हुए कुछ कानून बनाए हैं। इनमें साइबर सुरक्षा नीति, आईटी अधिनियम 2000, महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध जैसे प्रमुख कानून हैं। नागरिकों और सरकारों को जनता के बीच साइबर हमलों के बारे में जागरूकता फैलानी होगी, अन्यथा साइबर हमलों की दर बढ़ेगी।
- साइबर क्राइम वालंटियर्स, साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल, एनसीसी आदि जैसे साइबर सुरक्षा के सुदृढ़ता हेतु भारत सरकार ने बहुत सारे कदम उठाए हैं, जिससे साइबर सुरक्षा से निपटा जा सके।
- भारत अपने वैश्विक साथियों की तुलना में उच्च रैंक पर हैं क्योंकि भारत में 54: रैंसमवेयर और मैलवेयर हमले होते हैं जबकि विश्व स्तर पर 47: हमले होते हैं। मुंबई और अमेरिका में 9/11 और 26/11 जैसे क्रूर आतंकवादी हमले भी साइबर सुरक्षा की कमी के कारण हुए। सरकार ने भारत की साइबर सुरक्षा में सुधार के लिए कुछ बड़े कदम उठाए हैं और कई साइबर अपराध पुलिस स्टेशन स्थापित किए हैं।

निष्कर्ष

आजकल जिस प्रकार इंटरनेट का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है उसके साथ साइबर अटैक का भी खतरा बढ़ता जा रहा है। बड़े से बड़ा नेटवर्क से लेकर एक स्मार्ट फोन में भी सुरक्षा लगाना जरूरी होती है। इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए हमें साइबर सुरक्षा जरूर करवाना चाहिए। जिससे अन्य गतिविधियों में रोकथाम लगाया जा सकता है।

जी 20 के माध्यम से भारत और विदेशों के मध्य बढ़ते मैत्री संबंध

मुकेश चन्द्र गुर्जर
वाहन संचालक 'बी'

जी 20 का मुख्य उद्देश्य

जी 20 समूह में सम्प्रभू राज्य, अफ्रीकीय संघ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। यह विश्व अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्रमुख मुद्दों, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय मामले, जलवायु परिवर्तन शमन, स्वास्थ्य, कृषि ऊर्जा, पर्यावरण, भ्रष्टाचार विरोध और संधारणीय विकास के सम्बोधन हेतु कार्य करता है।

स्थापना–1999 (2008 राष्ट्र / शासन प्रमुखों का शिखर सम्मेलन)

सदस्यता – अर्जेंटीना, ऑस्ट्रलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इण्डोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, दक्षिण कोरिया, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, अफ्रीकी संघ, ई.यू.।

जी20 विश्व की अधिकांश सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के वित्त मन्त्रालयों से बना है, जिसमें औद्योगिक और विकासशील देश शामिल हैं; यह सकल विश्व उत्पादन का लगभग 80%, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 75%, वैश्विक जनसंख्या का द्वितीयांश और विश्व भूमि का 60% भाग है।

भारत "वसुधैव कुटुंबकम" (समूचा विश्व एक परिवार है) के बुनियादी नज़रिए के साथ आगे बढ़ेगा, "एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य" का आदर्श वाक्य इसे बेहतरीन रूप से दर्शाता है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास की अवधारण चिर काल से ही भारत की संस्कृति एवं सभ्यता का अंग रही है।

ये शब्द महज शब्दों में माला की तरह सुशोभित करने के लिए ही नहीं हैं, बल्कि व्यवहार में भारत ने इसे निभाया भी है। इस अवधारणा के अनुपालन में अतीत में भारत ने विश्व के अन्य समुदायों को अपने देश में पनाह दी है। कालांतर में भारत ने कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर इसे साबित भी किया है। फिर चाहे अफगानिस्तान संकट के समय सभी की सुरक्षित वापसी हो या युक्रेन में फंसे भारतीयों व अन्य देशों के लोगों को वापस लाने की पहल हो या कोरोना काल में 'वैक्सीन मैत्री' पहल के जरिए विश्व के अधिकतर देशों चाहे वे विकसित हों या विकासशील दोनों तक ही वैक्सीन पहुँचाने की बात हो, भारत ने इस बात को सिद्ध किया है कि उसका अपना देश, क्षेत्र ही नहीं बल्कि पूरी वसुधंरा उसका अपना घर है तथा उसमें रहने वाले लोग उसके 'कुटुम्ब' या परिवार के समान हैं।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की इन खूबियों के मद्देनजर विकसित एवं विकासशील देशों के समूह 'जी–20' ने भारत को इस समूह की अध्यक्षता एक ऐसे समय में सौंपी है जब विश्व विभिन्न मोर्चों पर विविध प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारत ने 1 दिसंबर 2022 को इंडोनेशिया से जी–20 अध्यक्षता की कमान हाथों में ली है। जिसका अध्यक्ष वह 30 नवंबर, 2023 तक यानी एक वर्ष के लिए बना रहेगा। भारत दिसंबर, 2021 में ही 'जी–20 ट्रोइका' समूह का सदस्य बन गया था। यहाँ जी–20 ट्रोइका से आशय यह है कि हर साल जब एक सदस्य देश अध्यक्ष पद ग्रहण करता है, तो वह देश पिछले साल के अध्यक्ष और अगले साल के अध्यक्ष के देश के

साथ समन्वय स्थापित करता है। इस प्रक्रिया को ही 'ट्रोइका' कहा जाता है। यह ट्रोइका जी–20 समूह के एजेंडे के साथ सामंजस्य एवं निरंतरता कायम रखने का कार्य करता है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भिन्न–भिन्न पंथों, भाषाओं एवं संस्कृति के सबसे सशक्त प्रतिनिधियों में से एक है। विविधता सौहार्द्र एवं सह–अस्तित्व की हमारी समृद्ध विरासत रही है। इन्हीं भाषाओं के अनुरूप ही भारत ने जी–20 अध्यक्षता की थीम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' रखी है। जी–20 के लोगों में भारत के राष्ट्रीय पुष्प 'कमल' को जगह दी गई है, जो कठिन समय में भी वृद्धि और लचीलेपन का प्रतीक है। लोगो में ग्लोब पृथ्वी का प्रतीक है जो भारत के पृथ्वी हितैषी दृष्टिकोण का द्योतक है। इस प्रकार लोगो एवं थीम दोनों ही जी–20 में भारत के नेतृत्व के इस मर्म को प्रदर्शित करते हैं कि वह निर्विवाद रूप से एकजुट करने वाला शांतिदूत है।

एक शांतिदूत के रूप में भारत की महत्ता तब और अधिक बढ़ जाती है जब पूरा विश्व समुदाय विभिन्न चुनौतियों से जूझ रहा हो तथा भारत की ओर आशा भरी नजर से देख रहा हो। विश्व अभी भी कोविड महामारी से उबरने में जुटा है। इसके अतिरिक्त रूस, युक्रेन संकट जनित वर्तमान ध्रुवीकृत व खंडित भू–राजनीतिक तनावपूर्ण स्थिति ने आग में घी का काम किया है। इसके मिश्रित प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था पर स्पष्ट तौर पर दिखाई पड़ रहे हैं। वैश्विक ऋण सर्वकालिक उच्च स्तर पर है। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम तब और अधिक बुरे हो जाते हैं जब जनसंख्या का अधिकांश भाग प्राथमिक क्षेत्र यानी कृषि एवं संबंधित गतिविधियों पर आश्रित हो। इन वैश्विक चुनौतियों के अतिरिक्त कुछ चुनौतियाँ हैं, जिन्हें अध्यक्षता के दौरान भारत को संबोधित करने की जरूरत है।

भारत लंबे समय से आतंकवाद एवं संगठित अपराध से पीड़ित रहा है। भारत आतंकवाद को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने तथा इसके सभी रूपों पर प्रतिबंध लगाए जाने को लेकर संयुक्त राष्ट्र में प्रस्ताव भी ला चुका है, परंतु अभी तक इस दिशा में किसी अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपेक्षित प्रगति नहीं हो सकी है। भारत को जलवायु वित्त के सन्दर्भ में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समान वैचारिक पृष्ठभूमि का निर्माण करने की जरूरत है। भारत जलवायु वित्त से संबंधित चर्चाओं एवं इसकी स्पष्ट परिभाषा पर प्रगति को लेकर उत्सुक है। भारत का इस संबंध में यह मत है कि विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त की परिभाषा में अधिक स्पष्टता की आवश्यकता है, जिससे जलवायु कार्रवाई के लिए वित्त प्रवाह की सीमा का आकलन किया जा सके। सम्मेलन की अध्यक्षता के दौरान भारत को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मुद्दों के सन्दर्भ में देशों का उत्तर–दक्षिण विभाजन समाप्त करने की वकालत करनी होगी। साथ ही असमानता के सभी प्रारूपों का विरोध करते हुए ग्लोबल साउथ की मुखर आवाज भी बनना होगा। वर्तमान में शरणार्थी समस्या एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। खुद भारत रोहिंग्या, चकमा हाजोंग, तिब्बती और बांग्लादेशी शरणार्थियों के कारण मानवीय नैतिक तथा आंतरिक समस्या से संबंधित अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। अतः शरणार्थी समस्या से जूझ रहे देशों को भारत से यह अपेक्षा होगी कि वह अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को इस संबंध में एक स्पष्ट एवं प्रभावी नीति का निर्माण करने के लिए एक मंच पर लाएं।

21वीं सदी में व्यापारिक तथा रणनीतिक महत्त्व के कारण हिंद–प्रशांत क्षेत्र से चर्चा में बना हुआ है। परन्तु चीन की विस्तारवादी नीतियों के कारण इस क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन देखने को मिलता है। हालांकि भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया व अमेरिका का गठजोड़ इस क्षेत्र में नियम आधारित व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। फिर भी भारत ने जी–20 के मंच पर इस मुद्दे को प्राथमिकता के तौर पर उठाया। इससे भारत की छवि

न सिर्फ दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों की नजर में बेहतर हुई बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसमें सुधार हुआ। भारत ने इस मंच के जरिए बहुपक्षीय संगठनों में सुधार के मुद्दे भी प्रमुखता से उठाए। संयुक्त राष्ट्र विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं में विश्व के पश्चिमी देशों का प्रभुत्व है। भारत को इन संगठनों में विकासशील देशों की समान भागीदारी हेतु इनकी कार्यप्रणाली एवं संरचना में सुधार की मांग करनी चाहिए।

भारत इन चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए पूरी तरह से तैयार है। एक उभरती हुई प्रमुख अर्थव्यवस्था एवं ठोस अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियों से भारत उम्मीद की किरण के रूप में दिख रहा है। अध्यक्ष के रूप में भारत का जी–20 समूह के अन्तर्गत कार्यसमूह स्थापित करने की योजना है। इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, व्यापार, पर्यटन, तकनीक आदि प्रमुख क्षेत्रों में भारत की प्राथमिकाताओं की राह मिलेगी। वहीं बी–20 (कारोबारी समुदाय), वाई–20 (युवा), डब्ल्यु–20 (महिलाओं) और एस–20 (विज्ञान के समूह) जैसे सक्रियता समूहों के माध्यम से नागरिक समाज की भी 'जी–20 एजेंडा' को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी।

अतीत के अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के विपरीत भारत में जी–20 की बैठकें केवल नई दिल्ली या कुछ महानगरों तक ही सीमित नहीं थी। बल्कि समावेशी सरकार की संकल्पना के अंतर्गत इससे जुड़े आयोजन देश के 50 से अधिक शहरों में होंगे। साथ ही इस दौरान 200 से अधिक आयोजन नागरिकों को भारत की जी–20 गाथा से जुड़ने का अवसर प्रदान किया। यह घरेलू स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को अपनी क्षमताओं और ताकत दिखाने का हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर रहा।

सम्मेलन के दौरान भारत ने घरेलू स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में उठाए गए सराहनीय कदमों को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया। भारत सरकार ने सामाजिक–आर्थिक बाधाओं को दूर करने के लिए डिजिटल तकनीक का प्रभावी उपयोग किया है। जन–धन–आधार–मोबाइल (जैम) की त्रिवेणी ने प्रत्यक्ष लाभ अंतरण और वित्तिय समावेशन को प्रोत्साहन दिया है। प्रधानमंत्री जन अरोग्य योजना विश्व की सबसे बड़ी सरकारी योजना है। अक्टूबर 2021 में करीब 12 लाख करोड़ के यू.पी.आई. लेन–देन हुए जो भारत में डिजिटली क्रांति की वास्तविक तस्वीर को सामने लाती है। आज भारत अपने अद्भुत डिजिटल ढांचे को विश्व के साथ साझा करने की स्थिति में है। राष्ट्रमंडल देशों से हमारी यू.पी.आई. तकनीक के क्षेत्र में अमेरिका व चीन के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। भारत ने कई देशों के साथ स्वदेशी 5जी तकनीक साझा करने का प्रस्ताव रखा है। आज अफ्रीका के तमाम देश अब तकनीक और ज्ञान के लिए पश्चिमी देशों की बजाय भारत की ओर देख रहे हैं।

हाल ही में भारत में लाइफ मिशन की शुरूआत की है, जो पारंपरिक भारतीय जीवन शैली से प्रेरित अवधारणा है। जी–20 अध्यक्षता के दौरान जलवायु के मोर्चे पर उठाए जा रहे कदमों पर गहन मंथन के दौरान भारत लाइफ मिशन के रूप में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एक अनुपम भेंट देने में सक्षम होगा भारत का यह प्रयास होगा कि इस दूरदर्शी पहल का दायरा बढ़ाकर उसे वैश्विक जीवन शैली का हिस्सा बनाया जाए। भारत सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तीकरण की दिशा में प्रगतिशील कदम उठाकर आधी आबादी को उसका उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया है पीएम मुद्रा जैसी योजनाओं ने महिलाओं में उद्यमिता का भाव बढ़ाकर उन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाया है। ऐसे में महिला सशक्तीकरण और प्रतिनिधित्व भारत के जी–20 विमर्श के केन्द्र में होगा। सम्मेलन के दौरान तमाम देशों के प्रतिनिधियों ने भारत के विभिन्न शहरों का दौरा किया इससे देश में पर्यटन उद्योग को काफी लाभ हुआ। साथ ही छोटे एवं स्थानीय कारोबारियों के लिए अवसर उत्पन्न होने से उनकी

आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी। अध्यक्षता के दौरान भारत का यह प्रयास रहा कि अधिक से अधिक नागरिक सहभागिता बढ़े ताकि स्थायी विरासत गढ़ी जा सके।

भारत की एक अरब से अधिक आबादी के लिए वर्ष 2023 स्वर्णिम वर्ष सिद्ध होने का मंच तैयार किया, जिसमें हमें विश्व को अपना बेहतरीन रूप दिखाया। हमारी देहरी पर आने वाले अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को प्रगति के प्रति अपनी उत्कंठा दिखाई। आज अमेरिका, ब्रिटेन जैसे विश्व के पुराने किले ध्वस्त होने की राह देख रहे हैं। जी–20 जैसे प्रमुख वैश्विक मंचों पर विकासशील देशों का प्रभाव बढ़ा है। जी–20 अध्यक्ष के रूप में भारत को रणनीतिक भू–राजनीतिक लाभ मिला है और उसे प्रभावी वैश्विक आवाज के रूप में स्थापित होने के लिए इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाया। जी–20 के इस मंच के जरिए भारत ने छिन्न–भिन्न विश्व को एक परिवार के रूप में पिरोने का कार्य किया। सतत् वैश्विक वृद्धि को गति देने और विश्व शांति को माध्यम बनकर सभी के लिए एक समावेशी भविष्य बनाने का प्रयास किया।

जी–20 शिखर सम्मेलन 2023 की बड़ी उपलब्धियाँ

हाल ही में (सितंबर) भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित जी–20 शिखर सम्मेलन अब तक का सफल सम्मेलन माना जा रहा है, जी–20 नेताओं ने इस सम्मेलन के पहले दिन जहाँ गंभीर चुनौतियों पर चर्चा करने के बाद फैसले किए गए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस बात की जानकारी साझा की।

नई दिल्ली घोषणापत्र पर सहमति

जी -20 देशों के बीच सबकी सहमति से नई दिल्ली घोषणापत्र को अपनाया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत मंडप में शिखर सम्मेलन के दूसरे सत्र को संबोधित करते हुए इसकी जानकारी साझा की। उन्होंने कहा था कि अभी–अभी अच्छी खबर मिली है कि हमारी टीमों की कड़ी मेहनत और आपके सहयोग के कारण नई दिल्ली घोषणा पत्र पर आम सहमति बनी है। मैं अपने मंत्रियों और सभी अधिकारियों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से इसे संभव बनाया। गौरतलब है कि पहले रूस–यूक्रेन के मुद्दे को लेकर इस घोषणा पत्र को मंजूरी मिलने में दिक्कतें आ रही थी।

निष्कर्ष

ये भारत और विदेशों के मध्य जी–20 के माध्यम से बढ़ते मैत्री सम्बन्धों का ही परिणाम है कि विश्व में इतना विरोधाभास होने पर भी नई दिल्ली घोषणा पत्र पर सहमति बन पाई।

वोकल फॉर लोकल

विशाल अग्रवाल
विज्ञानिक 'ई

"करो ऐसा व्यवहार, लोकल से हो प्यार।
देश में रोजगार बढ़ाना है, लोकल उत्पाद अपनाना है।।"

प्रस्तावना

"वोकल फॉर लोकल" एक महत्त्वपूर्ण अभियान है जिसका उद्देश्य स्थानीय वस्तुओं का उत्पादन करना, उपयोग करना और साथ ही उनको प्रोत्साहित करना है। यह अभियान आर्थिक स्वावलंबन का संदेश है जो भारतीय अर्थव्यवस्था को स्वदेशी उत्पादों को समर्थन देने और उनका प्रसार करना है। ताकि देश की सार्वभौमिक आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त 2020 को लाल किले की प्राचीर से अपना स्वतंत्रता दिवस भाषण देते हुए देश के लोगों को "वोकल फॉर लोकल" के लिये प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि अब स्थानीय उत्पादों का प्रयोग करने, गर्व से इसका प्रसार करने तथा वैश्विक बनाने का समाय आ गया है तभी "मेक इन इंडिया" के सपनों को पूरा किया जा सकेगा। इस अभियान के द्वारा स्थानीय उत्पादों को विश्व स्तर पर नई पहचान मिलेगी और साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। इस अभियान के परिपूर्ण होने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है लेकिन इन चुनौतियों का सामना करने के लिये सरकार द्वारा समय–समय पर आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं जिससे भारत के स्थानीय एवं स्वदेशी विनिर्माण लोकल बाजार एवं लोकल आपूर्ति श्रृंखला को सुदृढ़ किया जा सके। इस तरह वोकल फॉर लोकल एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है जो हमारे मेक इन इंडिया के सपनों को साकार कर, भारत को विश्व स्तर पर एक सशक्त शक्ति के रूप में प्रस्तुत करने में आवश्यक, महत्त्वपूर्ण एवं सराहनीय कदम है।

वोकल फॉर लोकल का अर्थ, महत्त्व एवं उद्देश्य

वोकल फॉर लोकल का मूल अर्थ सभी आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन, उपयोग एवं प्रसार करना है। इस अभियान का लक्ष्य यह है कि सभी भारतवासी न केवल लोकल उत्पाद खरीदें बल्कि आयातित उत्पादों का उपयोग कम करें। वर्तमान में वैश्वीकरण में आत्मनिर्भरता की परिभाषा में बदलाव आया है और वोकल फॉर लोकल इसी बदलाव का परिणाम है इस प्रकार वोकल फॉर लोकल के तहत स्वदेशी उत्पादों को अपनाते हुए मेक इन इंडिया के लक्ष्य को समाहित करते हुए, लोकल उत्पादों को वैश्विक बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल की है जिससे भारत आत्मनिर्भर बनने के साथ ही भूमण्डलीकरण के दौर में दूसरे देशों के लिये मार्गदर्शक भी बनेगा। कोरोना महामारी के दौरान विश्व स्तर पर लॉकडाउन के समय, सारे विश्व के साथ भारत ने भी स्थानीय उत्पादों की उपयोगिता, आवश्यकता एवं महत्त्व को समझा और इसी दिशा में वोकल फॉर लोकल मंत्र के द्वारा प्रधानमंत्री ने भारतीयों उत्पादों एवं कम्पनियों को विश्व स्तर पर एक नये आयाम प्रदान करने के लिये आह्वान किया।

वोकल फॉर लोकल का मंत्र वर्ष 1905 में हुए स्वदेशी आन्दोलन को याद दिलाता है जो अपने देश में निर्मित वस्तुओं की याद दिलाता है। स्वतंत्रता पाने के संघर्ष के दौरान महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय ने भारतीय उत्पादों के समर्थन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। लाला लाजपत राय ने "लला" नाम की चिकनी मिट्टी बनाई और उसका प्रचार किया इसी प्रकार डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े ने उद्योग में स्वदेशी तकनीकों के प्रयोगों का समर्थन किया। इसी क्रम में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने रक्षा क्षेत्र में भारतीय उत्पादों के आवश्यकता एवं महत्त्व पर काफी जोर दिया। वर्ष 2020 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खादी, हथकरघा जैसे लोकल उत्पादों की विश्व स्तर पर माँग को प्रस्तुत करते हुए, इन स्थानीय उत्पादों के उत्पादन, उपयोग एवं प्रचार के लिये वोकल फॉर लोकल का मंत्र पूरे देश को दिया।

प्रयोजनमूलक हिन्दी का बदलता स्वरूप

प्रवीन जैन, वैज्ञानिक 'डी' एवम्
नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'

भाषा संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है लेकिन जब यही भाषा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में अधिक से अधिक सक्रिय होती है तो स्वाभाविक रूप से उसके प्रयोग क्षेत्र का भी विस्तार होता चला जाता है। इसे ही हम प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं यही रोजी–रोटी का माध्यम बनने में विशेष भूमिका निभा रही है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी को अंग्रेजी में 'Functional Hindi' कहा जाता है। हिन्दी की पहचान साहित्य, कविता, कहानी तक ही सीमित नहीं है। आज वह ज्ञान–विज्ञान की सोच को अभिव्यक्त करने का सक्षम समर्थ साधन भी बन चुकी है। इस प्रकार बहुआयामी प्रयोजनों की अभिव्यक्ति में सक्षम, व्यावहारिक एवं प्रशासनिक हिन्दी का स्वरूप ही प्रयोजनमूलक हिन्दी है। इसका दूसरा नाम व्यावहारिक हिन्दी भी है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के उद्देश्य– सुयोग्य तथा परिपूर्ण दुभाषियों को तैयार करना जो शासन संचालन तथा समाज की सेवा कर सकें। विभिन्न भाषाओं के मध्य सम्पर्क सेतु का कार्य करना। भाषा के विभिन्न रूपों शैलियों की जानकारी देना। हिन्दी के द्वारा आदर्श अनुवादक तैयार करना। हिन्दी भाषा के समन्वयात्मक स्वरूप से हिन्दीतर भाषियों को परिचित कराना। वैज्ञानिक एवं तकनीक क्षेत्रों में हिन्दी के अनुप्रयोग से परिचित कराकर उसमें योग्यता हासिल करना। हिन्दी भाषा के अन्य व्यावहारिक पक्षों एवं दैनिक व्यवहार की भाषाई आवश्यकता की संपूर्ति का प्रयास करना। साहित्येतर तथा व्यावहारिक क्षेत्रों में राजभाषा के उद्देश्यों को सफल करने के लिए निपुणता एवं कौशल को विकसित करना। दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त हिन्दी शब्दावली तथा मानक पारिभाषिक शब्दावली का बोध कराना।

प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप

प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप गत्यात्मक है। आवश्यकतानुसार यह अपने स्वरूप में परिवर्तन करती रहती है। कार्यालय व्यवसाय संचार, राजनीति आदि क्षेत्रों में यही अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसकी अपनी विशिष्ट शब्दावली पद रचना और वाक्य विन्यास है। इसका सरल–सुबोध रूप विशिष्ट रचना, प्रक्रिया और पारिभाषिक शब्दावली सरकारी कार्यालयों के काम–काज को सम्पन्न करने में सक्षम है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी की शैलियाँ प्रवृत्तियाँ इसकी जीवन्तता एवं गतिशीलता की द्योतक है। वहीं नवीन प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक उन्नति इसके स्वरूप का विकास कर रहे हैं।

डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी की इसके स्वरूप के सम्बन्ध में मान्यता है कि "प्रकार्य की दृष्टि से प्रयोजनमूलक भाषा तथा साहित्यिक भाषा एक ही है, किन्तु इनके स्वरूप में मूल अन्तर यह है कि साहित्यिक भाषा में अर्थ बहुधा व्यंजनाश्रित और लाक्षणिक होता है, जबकि प्रयोजनमूलक भाषा अभिधापरक और एकार्थी होती है। साहित्यिक भाषा प्रायः अलंकारपूर्ण और अनेकार्थी होती है, जबकि प्रयोजनमूलक भाषा प्रायः अलंकार रहित, सीधी स्पष्ट और स्वतः पूर्ण होती है।

परियोजनक मूलक हिंदी के विविध रूपों का आधार उनका प्रयोग होता है राजभाषा के पद पर आसीन होने से पूर्व हिंदी सरकारी कामकाजी तथा प्रशासन की भाषा नहीं थी। स्वतंत्र भारत के बाद राजभाषा हिंदी बनी, जिसके फलस्वरूप हिंदी साहित्य लेखन ही नहीं बल्कि भारत में आधुनिक ज्ञान विज्ञान और टेक्नोलॉजी के प्रस्फुटन और फैलाव के कारण विभिन्न क्षेत्रों के साथ सरकारी कामकाज तथा प्रशासन के नए अनछुए क्षेत्र से गुजरना पड़ा जिसको देखते हुए प्रशासन, विधि, दूरसंचार, व्यवसाय, वाणिज्य, खेलकूद, पत्रकारिता आदि संबंधित पारिभाषिक शब्दावली गठन की ओर संतोषप्रद विकास एवं विस्तार किया गया। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रमुख प्रयुक्तियां देखी जा सकती हैं।

साहित्यिक प्रयुक्ति– साहित्य किसी भी भाषा की अनिवार्य आवश्यकता है लेखबद्ध साहित्य की भाषा काफी विशिष्टताएं लिए होती हैं इसलिए वह लेखन तथा विशिष्ट पाठकों तक सीमित रहती है साहित्यिक भाषा में जनसामान्य के जीवन के साथ दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र तथा संस्कृति का समावेश होता है। हिंदी भाषा की साहित्यिक प्रयुक्ति की परंपरा बहुत पुरानी है हिंदी साहित्य में अनेक विधाओं तथा उसके विशेषताओं को समेटने की क्षमता है यह भारतीय तथा यूरोपीय भाषाओं की शब्दावली ग्रहण कर समस्त युग–चेतना अभिव्यक्ति प्रदान करने की कोशिश की है। अतः हिंदी भाषा की साहित्यिक अत्यधिक सजग और सर्व समावेशी है।

वाणिज्य प्रयुक्ति– हिंदी भाषा की दूसरी महत्वपूर्ण प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति 'वाणिज्यिक' की है औद्योगिक क्रांति के बाद इसकी व्याप्ति मात्र राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय तथा बहुआगामी है जिसके अंतर्गत व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय, परिवहन, बीमा, बैंकिंग तथा निर्यात–आयात आदि क्षेत्रों का समावेश होता है जिसमें निश्चित शब्दावली और निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होता है इन क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा साहित्य वाक्य रचना से काफी भिन्न होती है जैसे सोने में उछाल, चांदी मंदी, तेल की धार ऊंची आदि। अतः हिंदी साहित्य की वाणिज्यिक प्रयुक्ति का क्षेत्र काफी विस्तृत और लोकप्रिय है।

कार्यालय प्रयुक्ति– हिंदी भाषा की अत्यंत आधुनिक एवं सर्वोपयोगी प्रयुक्ति में 'कार्यालयी' प्रयुक्ति आती है। जिसका प्रयोग सरकारी, अर्द्ध सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयो में काम–काज के रूप में होता है। प्रशासनिक भाषा तथा बोलचाल की भाषा में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। कार्यालय भाषा की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली, पद–रचना आदि होते हैं कार्यालयीन हिंदी में कामकाज के रूप में मसौदा लेखन, टिप्पणी लेखन, पत्राचार संक्षेपण, प्रतिवेदन, अनुवाद आदि में प्रयुक्त होता है।

विज्ञापन एवं जनसंचार प्रयुक्ति– हिंदी के प्रयोजनमूलक प्रयुक्ति के रूप में विज्ञापन और जनसंचार की भाषा तेजी से उभर कर सामने आई है। आकर्षक वाक्य विन्यास, शब्दों का उचित चयन तथा वशिष्ठ पूर्ण प्रभाव में बहुत भाषिक संरचना विज्ञापन भाषा प्रयुक्ति के मुख्य तत्व आते हैं। विज्ञापन की भाषा चूंकि व्यापार, व्यवसाय तथा वाणिज्य से संबंध रखती है, अतः इस उसमें आकर्षक, मोहक, भाषा शैली, सर्वव्यता संक्षिप्ता आदि गुणों का होना नितांत आवश्यक है। वर्तमान युग में हिंदी के विज्ञापन भाषा का रूप जनसंचार के माध्यमों (समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो दूरदर्शन सिनेमा) आदि आते हैं। अतः किसी भी देश की जनसंचार उस देश की सशक्त प्रगतिशीलता को दर्शाता है।

विधि एवं कानूनी भाषा प्रयुक्ति– कानूनी भाषा की प्रयुक्ति का सीधा संबंध राजभाषा अनुवाद प्रक्रिया तथा तकनीकी शब्दावली से माना जाता है। कानूनी प्रक्रिया एवं अदालत में तकनीकी शब्दावली होने के कारण जन

सामान्य के लिए जटिल, नीरस तथा उबारू प्रतीत होता था इसी को देखते हुए विधि एवं कानून के क्षेत्र में संस्कृत, हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को ग्रहण किया गया और इस प्रकार कानून एवं विधि की भाषा में प्रयोग होने वाले तकनीकी शब्दावली, विशिष्ट पद विन्यास, लंबे संयुक्त वाक्य संरचना को सुचारू रूप से चलाने में प्रतिष्ठित हुआ।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा प्रयुक्ति– वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी से तात्पर्य है, हिंदी का वह रूप जो विज्ञान और तकनीकी शब्दावली से मुख्यतः संबंध रखता है राजभाषा प्रयोग संबंधी राष्ट्रपति ने 27 अप्रैल, 1960 के आदेश अनुसार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना 1961 में की गई। विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी की भाषा सामान्य व्यवहार की भाषा से सार्थक भिन्न होती है, अतः वैज्ञानिक एवं तकनीकी विशिष्टत (एकरूपता) में ढालने के लिए हिंदी, संस्कृत के साथ अंतर्राष्ट्रीय भाषा शब्दावली का प्रयोग किया गया। आज विज्ञान और टेक्नोलॉजी की क्षेत्र में अनुप्रयुक्त हो रहा है, विज्ञान, गणित, विधि, अंतरिक्ष, दूरसंचार, टेक्नोलॉजी आदि।

पहले हिंदी भाषा का प्रयोग केवल साहित्य व शिक्षा के क्षेत्र में होता था लेकिन अब प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरुप काफी विस्त्रत हो चुका है। इससे अब रोजगार के नए–नए अवसर पैदा हो चुके हैं।

1. **कार्यालय हिंदी प्रशासनिक क्षेत्र में**– सरकारी अर्ध सरकारी निजी क्षेत्र के कार्यालय में होता है, राजभाषा अधिकारी के रूप में एक केंद्रीय संस्थान और कार्यालय में राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति की जाती है जो अपने यहां पर हर प्रकार से हिंदी में प्रयोग को बढ़ावा देते हैं और हिंदी में कामकाजी वातावरण बनाते हैं
2. **रेडियो जॉकी और समाचार वाचन के रूप में**– रेडियो जॉकी और समाचार वाचन के रूप में जो कि एक ऐसा करियर है जिसमें आपकी आवाज सुनी जाती है इस दुनिया की बहुत–सी ऐसी आवाज है जिन्हें हम आज तक नहीं भूले हैं।
3. **पत्रकारिता के क्षेत्र में** – इस समय सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों और सबसे ज्यादा देखे जाने वाले समाचार चैनलों में दो तिहाई से अधिक हिंदी भाषा के ही है।
4. **अनुवादक** – दुभाषिया अनुवाद का क्षेत्र बहुत बड़ा है दुनिया भर में जैसे–जैसे हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है वैसे–वैसे अनुवादको की मांग बढ़ती जा रही है अनेक देसी विदेशी मीडिया संस्थान राजनीतिक संस्थाएं पर्यटन से जुड़े संस्थान और बड़े–बड़े होटलों में हिंदी भाषा की आवश्यकता बढ़ रही है।
5. **रचनात्मक लेखन** – रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में जाने वाले के पास दो प्रकार के विकल्प हैं पहला स्वतंत्र लेखन और दूसरा है फिल्म टीवी रेडियो आदि संस्थाओं में काम करते हुए, आजकल टीवी सीरियल वेब सीरीज लेखन का क्षेत्र काफी बढ़ चुका है।
6. **कंप्यूटर का क्षेत्र** – आज का युग कंप्यूटर का युग है वर्तमान में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट आदि में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच और संस्थानों में हिंदी के इस्तेमाल में व्यापक वृद्धि हुई है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, व्हाट्सएप जैसे प्लेटफार्म पर हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। माइक्रोसॉफ्ट में गूगल जैसी दिग्गज कंपनियों ने भी हिंदी में बहुत बड़े पैमाने पर काम करना शुरू कर दिया है ऐसे में इस क्षेत्र में भी काफी संभावनाएं हैं।

निष्कर्ष – प्रयोजनमूलक हिन्दी को लगतार प्रयोग करने से रोजगार के क्षेत्र भी उत्पन्न हुए हैं, जिससे हिंदी का प्रयोग बहुत बड़े पैमाने पर बढ़ चुका है। बहुराष्ट्रीय संस्थानों में हिंदी के इस्तेमाल में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

एक कोशिश

पूनम भास्कर सिंहमार
वैज्ञानिक 'ई'

राजू, कभी उसने सोचा न था, इस दुनिया में जन्म लेकर उसे ये दिन देखना पड़ेगा। माँ की कोख में उसने न जाने क्या–क्या सपने देखे थे। बड़ी जिज्ञासा थी उसे अपने माता–पिता से मिलने, दुनिया वालों को जानने की। वक्त गुजरता गया, राजू सपने बुनता रहा। फिर वो दिन आया, उसने जन्म लिया। माँ–पिता, दादा–दादी सबका दुलार उसे खूब मिलने लगा। पढ़ाई, खेलकूद सभी में वो बहुत अच्छा था। फिर वक्त ने नई करवट ली, राजू का जीवन उथल–पुथल हो गया। राजू जहाँ रहता था उस क्षेत्र में बच्चों को जापानी बुखार हो रहा था। इसी बुखार की चपेट में राजू भी आ गया। राजू उस समय 6 साल का था। इस बुखार ने राजू के दिमाग पर घर कर लिया और राजू हमेशा के लिए दिमागी तौर पर 6 साल का बच्चा रह गया। राजू के माता–पिता पर मानो आसमान से पहाड़ टूट गया, जो (राजू) उनके बुढ़ापे का सहारा बनने वाला था, जब माँ–पिता ही उसके सहारा बन गये। धीरे–धीरे राजू बड़ा होने लगा। माता–पिता भिन्न–भिन्न प्रकार की रोचक कहानियों की पुस्तक लाकर उसे देते, वो उन्हें पढ़ता और सोचता कितनी अच्छी कहानी है अपने पिता से वो हमेशा कहता "पिताजी, देखना जब बड़ा हो जाऊँगा तो मैं भी कहानी लिखूँगा" ये सुनते ही पिता की आँखों में आँसू आ जाते! 20 साल का राजू हो गया था, दिमागी तौर पर 6 साल का बच्चा बड़ा होने की बात करता था। वक्त गुजरता गया, माँ–बाप उसे घर में थोड़ा बहुत पढ़ाने लगे। कुछ उसे समझ में आता तो कुछ वो भूल जाता! बाहर जब वो खेलने जाता तो बच्चे उस पर हँसते और अंकल अंकल कहकर उसे बुलाते, उसे कुछ समझ आता और प्रतिदिन रात को अपनी रोचक कहानियों की दुनिया में खो जाता, जहाँ उसे कोई परेशान नहीं करता, जहाँ सिर्फ वो और उसकी कहानियाँ थी। कहानी पढ़ते–पढ़ते उसने सोचा आज मैं भी कहानी लिखूँगा। सोचने लगा कौन सी कहानी लिखूँ, क्या लिखूँ। पहले कहानी की किताब उठाई, कुछ समझ आया क्या लिखूँ, चिड़चिड़ाने लगा, किताब के पन्ने फाड़ने लगा, कुछ पत्र में, कमरे में हर तरफ कहानी की किताब के पन्ने थे और उन पन्नों में अपनी कहानी खोजता राजू। कोरा कागज लेकर लेते हुए कई घंटे उसे निहारता रहा, एक कोशिश वो अपने सपने को साकार करने में लगा रहा। पिता उसके समीप आकर उसे प्यार से गले लगाया और बोले 'बेटा हार या जीत सब किस्मत है मगर कोशिश करना अपने हाथ में है!' राजू उनकी बात सुनकर मुस्काया और भोलेपन से बोला "पिताजी ये हार जीत क्या होती है, मुझे न पता लेकिन मैं बड़ा हो जाऊँगा तो मैं भी कहानी लिखूँगा।" आज राजू 25 साल का हो गया, लेकिन वो आज भी उन कहानियों में अपनी कहानी खोजता है, एक कहानी लिखने की हर रोज एक कोशिश करता है। हर रोज एक कोशिश करता है।

बड़ों की बात मानो

सुश्री स्वीटी
तकनीशियन 'ए'

एक बार रोबोट्स की दुनिया में एक ट्रॉय नामक रोबोट था जो अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी से परेशान हो चुका था, रोज़ वही काम बार–बार करना बिना किसी एन्जोयमेंट के उसके लिए दिन बहुत ही उदासीनता भरा हो गया फिर एक दिन उसने फैसला लिया कि वह अब इंसानों की दुनिया में जाना चाहता है, जहाँ वो नए दोस्त बना सके तथा अपने जीवन को थोड़ा मनोरंजक बना सके। उसने अपनी इंसानों के बीच रहने की इच्छा अपन रोबो–किंग को बताई, लेकिन रोबो–किंग ने उसे जाने की मंजूरी नहीं दी क्योंकि वह उसका अनुभव कर चुका है। ट्रॉय ने रोबो–किंग की बात न मानते हुए, फिर भी मनुष्यों के बीच रहने का निर्णय किया, तो इस पर रोबो–किंग ने उसकी इच्छा का सम्मान करते हुए जाने दिया।

ट्रॉय को अब धरती पर आये 2 दिन बीत चुके हैं, पर वह अभी तक भी कोई मित्र/साथी नहीं खोज पाया तथा हताश–निराश एक खिलौनों की दुकान में बैठा है। तभी जूम नाम का एक बच्चा अपने पापा के साथ उस दुकान में खिलौने खरीदने आता है और वह ट्रॉय के प्रति इतना आकर्षित हो जाता है कि अब उसे और किसी खिलौने के प्रति कोई रूचि नहीं आती। जूम के पापा उसे वह खिलौना (ट्रॉय) दिला देते हैं। वह ट्रॉय को पाकर बहुत खुश है, पर उसे ट्रॉय की शक्तियों का अंदाज़ा नहीं है। जूम एक आलसी लड़का है, वह पढ़ने में भी बहुत सक्षम नहीं है। जब भी जूम अपना होमवर्क करने बैठता तो वह सो जाता या खेल में व्यस्त हो जाता, पर ये सब ट्रॉय देखता रहता। एक बार जूम अपना होमवर्क करना भूल गया और जूम को डाँट न पड़े इसलिए ट्रॉय ने उसका होमवर्क कर दिया। जब स्कूल में कॉपी चेक होने की बारी आई तो जूम डर गया क्योंकि वह भूल गया था और फिर हमेशा की तरह उसे क्लास के बाहर खड़ा होना पड़ेगा सज़ा के रूप में, पर जूम ने जैसे ही कॉपी निकाली तो उसने देखा कि होमवर्क तो पूरा है, वह ये देखकर अचंभित हो गया था। घर आकर उसने बहुत सोचा पर फिर सोचते–सोचते सो गया, ट्रॉय जूम को सोता देख फिर से उसका होमवर्क करने लगा और तभी जूम की नींद खुल गई और उसने ट्रॉय को अपना होमवर्क करते पाया, वह समझ नहीं पा रहा था कि इस पर कैसे री–एक्ट करे तो उसने ट्रॉय को अपनी पसंदीदा कैंडी दी और ट्रॉय और जूम दोस्त बन गए।

जूम के साथ दोस्ती के बाद ट्रॉय की जिंदगी में थोड़ा मनोरंजन आया, वह जूम के बाकी दोस्तों/साथियों से भी मिला और बहुत खुश रहने लगा। जूम के साथ खेलना, खाना, घूमना आदि में वह अपनी असली पहचान को भूल ही गया था। एक बार जूम और ट्रॉय को बात करते हुए उसके पापा ने देख लिया, वे यह दृश्य देखकर बहुत अचंभित हुए पर जैसे ही उसे यह ज्ञात हुआ कि ट्रॉय एक आधुनिक रोबोट है, उसने ट्रॉय को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करने का सोचे बिना इस बात की परवाह किए कि वह उसके बेटे का साथी/दोस्त है। उसने (जूम के पापा) ट्रॉय को ले जाकर आर्मी के हवाले कर दिया, जहाँ उसका AI जंग में इस्तेमाल किया जाना था। यहाँ ट्रॉय परेशान था कि अब जूम से कभी नहीं मिल पाएगा और वहाँ जूम परेशान था, हताश रहने लगा। ट्रॉय का बेहद इस्तेमाल किया गया और फिर उसे रोबो–किंग की बात याद आई जब उसे उसने मना किया था धरती पर जाने को।

जॉर्जिया देश के झंडे की उत्पत्ति

आनन्द कुमार सिंह
वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

आज से हजारों वर्ष पहले की बात है। कॉकेशस पहाड़ों के बीच में एक नदी घाटी थी। उस नदी का नाम क्रोना था। वह नदी घाटी अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए बहुत ही विख्यात थी। उस घाटी में पहाड़ों की तलहटी में कुछ छोटे–छोटे नगर थे। उन नगरों के नाम तिफ्लीस, बातुमी, सुखुमी आदि थे। उन नगरों में बहुत ही वीर कबीलों का निवास था। वो सभी कबीले आपस में लड़ा करते थे। उनके पड़ोसी इलाके, जो कि आज के आर्मीनिया और दक्षिणी रूस हैं, उनमें भी आपस में लड़ाई हुआ करती थी। आर्मीनिया जो कि विश्व का पहला ऐसा देश था, जिसने ईसाई धर्म को अपनाया। एक बार आर्मीनिया और रूस के राजा, जिसे जार बोलते थे, उन्होंने मिलकर जॉर्जिया के कबीलों पर हमला बोल दिया। फिर जॉर्जिया के एक वीर इंसान ने अपने आपस के सभी झगड़ों को भुलाकर, अपने क्षेत्र के सभी कबीलों को संगठित करके, आर्मीनिया और जार की सेनाओं पर जवाबी हमला किया। उस इंसान का नाम फ्रेडरिक जॉर्ज था। जॉर्ज को जादू–टोना भी आता था। उसने आर्मीनिया को उसी की भाषा में जवाब दिया। उसने एक बहुत ही विशाल जानवर का पुतला बनाया, फिर उसमें जान डाल दी। वह जानवर पक्षी था या डाईनासोर था, ये कोई नहीं समझ पाया। आर्मीनिया सेनाओं ने सोचा कि ये कोई ईश्वर का श्राप था। जॉर्ज ने उसी जानवर (पक्षी) पर बैठकर अपनी सेना का संचालन किया। वो पक्षी कितने भी भारी सामान एवं हथियार आदि को उठाकर हवा मे उड़ सकता था। वह पल भर में एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर उड़ जाता था। उस पक्षी के ऊपर रखे हुए हथियार कभी खत्म नहीं होते थे, क्योंकि जॉर्ज एक जादूगर था और जॉर्ज ने उस डायनासोर जैसे दिखने वाले पक्षी को जादू से बनाया था।

मगर देश और सेनाओं को एकत्रित करने के लिए एक झंडे की जरूरत तो पड़ती ही रहती है। इससे सेनाओं का मनोबल ऊपर रहता है। जॉर्ज ने ईसाई धर्म के पवित्र निशान क्रॉस को ही अपने झंडे के रूप में चुना। उसने उस झंडे को उस जानवर के ऊपर फहरा दिया। इससे उसने आर्मीनिया के सैनिकों में भी फूट डाल दी क्योंकि आर्मीनिया दुनिया का पहला ईसाई देश था और उसके सैनिक ईसाई धर्म के पवित्र झंडे के नीचे लड़ने वाले सैनिकों से लड़ाई नहीं कर सकते थे। फिर जॉर्ज ने अपने नए देश का नाम अपने नाम के अनुसार जॉर्जिया रख दिया और उसने अपने देश को अंततः युद्ध में विजय दिलाई। फिर आर्मीनिया के सभी राजाओं को अपनी भूल समझ आई और उन्होंने एक कबीले से दूसरे कबीलों को लड़ाना बंद कर दिया। दोनों देश आर्मीनिया और जॉर्जिया दोस्त बन गए और जॉर्जिया के अन्दर भी शांति आ गई। जॉर्जिया देश ने युद्ध के दौरान उपयोग किए हुए झंडे के विस्तृत रूप को ही अपने देश का झंडा चुन लिया।

गुल खिले हैं गुलशन–गुलशन

दिनेश कुमार मीना
वैज्ञानिक 'एफ'

आज का दिन रमेश के लिए बहुत ही खराब था। उसे आज कार्यालय में अपने उच्च अधिकारियों द्वारा बहुत सुनाया गया। हुआ कुछ इस तरह कि कार्यालय से आज उसके मुख्यालय ने कोई जानकारी माँगी जोकि समय पर तैयार नहीं हो सकी। इस पर उसको उच्च अधिकारी द्वारा बहुत डांटा गया। इसी उधेड़–बुन में जब वह घर पहुँचा तो सरिता ने कुछ बोला जिसे रमेश ने अनसुना कर दिया। इस पर सरिता ने अपना आपा खो दिया। वह भी रमेश के पीछे–पीछे कमरे में चली गई। और वह रमेश पर बरस पड़ी। रमेश पहले ही अपने कार्यालय की बात से परेशान था इस पर सरिता ने कुछ तीखा बोल दिया। बस अब क्या रमेश अपना आपा खो बैठा और सरिता पर भूखे शेर की तरह दहाड़ पड़ा। सरिता को यह उम्मीद नहीं थी, वह उसी क्षण कमरे से बाहर आ गई और अपना सामान बाँधने लगी और कार लेकर अपने पीहर चली गई। कुछ देर बार रमेश सरिता को ढूंढते हुए रसोईघर की ओर आया। फिर वह उसे सब जगह ढूंढता रहा परन्तु सरिता कहीं नहीं मिली। रमेश परेशान हो गया कि यह क्या हो गया। वह उसे फोन कर रहा था परन्तु फोन बंद आ रहा था। उसे कुछ समझ नहीं आया। पहले उसने फ्रिज से पानी की बोतल निकाली और सोफे पर बैठकर आराम से पानी पिया। इसी दौरान उसे याद आया कि साँझ में क्या घटा था। अब उसे याद आ रहा था कि सरिता उसे कुछ कहने की कोशिश कर रही थी। तब ही उसकी नजर डाईनिंग टेबल पर रखे सामान पर गई। उसने देखा कि वहाँ एक गिफ्ट पैक किया हुआ है जिस पर लिखा हुआ था "Happy Birthday Dear Husband"- इसे देखकर रमेश ने अपना माथा पकड़ लिया और उसे अपनी गलती का अहसास हो गया परन्तु करे तो क्या करे। उसने फोन निकालकर दुबारा सरिता को फोन करने के लाख प्रयत्न किए परन्तु सफलता उससे बहुत दूर थी। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था इससे उसे कुछ याद आया वह दौड़कर अपने कमरे की ओर गया। अलमारी में पागलों की तरह हर खाने को देखने लगा। इसी दौरान उसकी नजर एक फोल्डर पर पड़ी। रमेश ने उसे निकालकर पलंग पर बैठ गया और उस फोल्डर में से कुछ कागजों को निकालकर देखने लगा। वह इसी दौरान परेशानी की मुद्रा से निकलकर मुस्कराने लगा। आप भी सोच रहे होंगे कि इस अवस्था में रमेश कहीं पागल तो नहीं हो गया। थोड़ा धैर्य रखें अभी कहानी में मोड़ हाने वाला हैं रमेश के हाथ में जो कागज थे वो कोई आम पत्र नहीं थे। ये वो प्रेम पत्र थे जो सरिता उसे कॉलेज के जमाने में लिखा करती थी। आज रमेश का ध्यान पलंग की चादर पर भी गया। सरिता रमेश को जन्मदिन पर कुछ सरप्राइज देना चाहती थी। इस चादर पर सरिता ने कुछ प्रेम पत्रों को प्रिन्ट करवाया हुआ था। रमेश के हाथ में जो प्रेम पत्र था वो सरिता ने उसे पहली बार लिखा था। वह प्रेम पत्र इस चादर पर सबसे ऊपर छपा हुआ था। रमेश अब चादर को बड़े ध्यान से देखने लगा। रमेश ने पाया कि सरिता ने कुछ चुनिंदा पत्रों को इस पर छपवाया हुआ था। रमेश को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। कुछ देर तक तो वह आराम से लेटकर उन पत्रों को निहारता रहा। और उन सुनहरे दिनों की यादें ताजा करने लगा।

आप लोग क्या सोच रहे हैं कि रमेश ने क्या किया होगा आगे। सोचिए और अपनी अक्ल के घोड़ों को दौड़ने दीजिए। कुछ सोचा! चलो कोई बात नहीं मैं ही इस कहानी को अंजाम दे देता हूँ।

रमेश ने तुरन्त अपनी बाइक उठाई और सरिता के घर की दौड़ लगाई। इस दौरान उसे याद नहीं कि लाल बत्ती है या नहीं। वह जल्दी से जल्दी उधर पहुँचना चाहता था। बिल्डिंग के बाहर सरिता की कार देखकर उसकी जान में जान आई। वह बेसुध होकर अपने लक्ष्य की ओर जा रहा था। उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि यहाँ लिफ्ट भी है। वह बदहवास सीढ़ियों पर दौड़ते हुए आठवें तल पर पहुँच गया और मकान संख्या 809 की घंटी बजा दी। कुछ देर बाद में दरवाजा खुला तो सरिता खड़ी हुई थी। सोचिए अब क्या हुआ होगा। अरे भाई वही हुआ जो आप सोच रहे हैं। रमेश घुटनों के बल बैठा हुआ और एक गुलाब हाथ में लिए दरवाजे की ओर देख रहा था। यही तो होता है हमारी भारतीय फिल्मों में। हमेशा अंत सुखद ही होता है। रमेश को इस तरह देखकर सरिता को विश्वास नहीं हो रहा था। उसने अपने आपको एक चूंटी काटी। फिर देखा वही दिखा। आगे आप समझदार हैं कि क्या हुआ होगा।

अपराजिता

नेहा अग्रवाल
वैज्ञानिक 'डी'

कहते तो हैं अपराजिता, पर हर चीज से लड़ना पड़ता है।
रिश्ते हो या रिवाज, अपने हो या समाज,
हर किसी से उलझाना पड़ता है।
आंसू हो या मुस्कराहट, सपने हो या चाहत,
सबको दबा कर रखना पड़ता है।
कहते तो हैं अपराजिता, पर हर चीज से लड़ना पड़ता है।

प्रख्यात व्यक्तित्व

कहते तो हैं मातृशक्ति, पर बाँझ भी सुनना पड़ता है।
कहते तो है रूप सति का, पर आत्मदाह भी करना पड़ता है।
कहते तो हैं दुर्गा, काली, पर अबला भी सुनना पड़ता है।
कहते तो हैं मीरा भी, पर बचा आबरू चलना पड़ता है।
कहते तो हैं अपराजिता, पर हर चीज से लड़ना पड़ता है।

घर

कहते तो हैं घर की लक्ष्मी भी, पर कोख में मरना पड़ता है।
कहते तो हैं सहभागी, पर घरेलु हिंसा को सहना पड़ता है।
कहते तो हैं अन्नपूर्णा, पर सबको परोसने तक रुकना पड़ता है।
कहते तो हैं अर्धांगिनी, पर लपटों में जलना पड़ता है।
कहते तो हैं अपराजिता, पर हर चीज से लड़ना पड़ता है।

बेटी

यूँ तो हूँ खुशियाँ आँगन की, पर बुनियादी अधिकारों से वंचित रहना पड़ता है।
यूँ तो हूँ पहचान खूबसूरती की, पर तेजाब से झुलसना पड़ता है।
यूँ तो हूँ कुल का मान, पर मेरे लिए ही चलते सभी अभियान।
यूँ तो हूँ माँ का साया, पर फिर भी हूँ मैं धन पराया।
कहते तो हैं अपराजिता, पर हर चीज से लड़ना पड़ता है।

वर्क प्लेस

यूँ तो हूँ वर्किंग वुमन, पर गृहिणी भी बनना पड़ता है।
यूँ तो हूँ श्रेष्ठ परफॉर्मर, पर ले लू मैटरनिटी लीव अगर तो प्रमोशन गवाँना पड़ता है।
अगर बिठा लूँ ताल–मेल पुरुषों संग, समाज के ठेकेदारों से चरित्र निर्धारण करवाना पड़ता है।
अगर आधुनिक वस्त्र पहन लूं, भोज आदर्श, और परंपरा का उठाना पड़ता है।
यूँ तो हूँ अपराजिता, पर हर चीज से लड़ना पड़ता है।
क्यूँ करनी पड़ती है हर बार गुहार, क्यूँ झेलू मैं अनेकों तिरस्कार।
क्यूँ मचती है मेरे ही जन्म पर हाहाकार,
कब बदलेंगे ये विचार, कब ले पाऊँगी मैं अपना आकर।
जब ना होगा मेरे जन्म पर माँ का अपमान,
जब ना चलाने पड़ेंगे मेरे लिए अभियान,
जब ना देने होंगे मुझे हर रोज नए इम्तिहान,
तब पाऊँगी मैं असली सम्मान।

ना होगी जरूरत फिर सशक्तिकरण की,
क्यूंकि ना होगा कोई दुशासन, ना होगी जरूरत श्री कृष्ण की।
ना करना पड़ेगा नारियों का उत्थान,
ना होगा कोई पीड़ित, ना होगा कोई महान।
ना होगा जब मेरा उत्पीडन, तभी पूरा होगा ये स्वप्न,
क्यूंकि जब ना होगी कोई पीड़िता, तभी कह लाऊंगी
मैं सच्ची अपराजिता, मैं सच्ची अपराजिता।

भारत माँ की व्यथा

कल्पना कैथल
वैज्ञानिक 'ई'

खुशियों की बारात सजी है,
आए दिन त्यौहार के,
लाली, कमला, नीरा प्यारी,
सज जाओ घर द्वार में।
आज दिलाई मुझको आजादी,
न्यौछावर मैं अपने पूतों पर,
पंद्रह अगस्त उनीस सौ सैंतालिस आया ,
आजादी का द्वार लेकर।
बाल–लाल–आजाद–भगत,
और ना जाने कितने सपूत,
न्यौछावर हो गए मेरी आन पर,
तब पाया मैंने यह दिन, बरसों की कुर्बानी पर।
आओ नाचो गाओ बच्चों,
खुशी मनाओ सम्प्रांत में,
दिल भर आया मेरा आज,
इस मंजर को जान कर।
धीरे–धीरे संभल रही मैं,
छोटे–छोटे विकासों से,
जवान–किसान–विज्ञान परस्पर,
चला प्रगति के मार्गों में।
आजादी संग्रामी–बच्चे प्यारे,
आ गए प्रौढ़ अवस्था में,
नयी पीढ़ी तैयार हुई,
आगे मुझे बढ़ाने में।
बलि–बलि जाती देख के अपने,
गबरू नौनिहालों को,
ले जायेंगे मुझको अब तो,
आसमान की ऊंचाईयों में।
थोडा उनको लालच आया,
मैं भी थोडा घबराई
सोचा समय का फेर है,
टल जाएगा थोड़ी देर में।
धीरे–धीरे बढ़ती गई मैं,
होता गया विकास भी,
पर बाकी था मुझको छूना,
दूर लक्ष्य आकाश को।
समय चक्र आगे बढ़ा,
उम्मीदें थी परवान में,
आस लगाये देख रही मैं,
आते नए खलिहान का।
हाय! यह क्या देख रही मैं,
मार रहा भाई–भाई को,
साम्प्रदायिकता की आग लगी है,
मेरे प्यारे बागीचे को।
जल रहा कहीं पर राज्य,
जल रही मेरी आशाएँ,
दिल टूट गया यह देख मेरा,
दिन कैसा आ गया मेरे मुहाने में।
संभल जाओ मेरी संतानों,
मत लड़ो, गले, लग जाओ,
मत फाड़ो मेरे आँचल को,
मत काटो मेरी ममता को।
याद करो अपने पूर्वजों को,
जान पर लड़कर लाए थे,
ये दिन जो तुम देख रहे हो,
खून बहा कर लाये थे।
यदि नहीं तुम मिल कर चले,
नहीं दौड़ाया विकास पथ को,
चेतावनी ये मेरी है, रह जाओगे पीछे सबसे
गुलामी दोबारा आनी है।
मेरे प्यारे नौनिहालों,
भारत माँ की पुकार सुनो,
प्रगति पथ पर आगे बढ़ो,
पायी सफलता चाँद पर,
सूरज पर है नजर तुम्हारी।
भूलकर अब सब मतभेदों को,
हाथ– से– हाथ मिलाओ बच्चों,
रास्ता और मंजिल है आगे,
तुम बनोगे विश्वविजेता।।

स्वस्थ जीवन के मंत्र

प्रणव कुमार
वैज्ञानिक 'ई'

सुबह–सबेरे तुम जग जाओ, बाहर फिर घूम के आओ
थोडा दौड़ो, कूदो, भागो, हाथ उठा कर सांसे भरलो
पैर के ऊपर खुद को खींचो, ताड़ासन का चक्र पूरा करलो
एक पैर पर खड़े हो जाओ, हाथों को फिर ऊपर उठाओ
वृक्षासन नाम है इसका, इससे शरीर का संतुलन बढाओ
अब बारी है भुजंगासन की, पेट के बल लेट जाने की
कमर से ऊपर के भागो को, सांसे भर कर ऊपर उठाओ
सांसे छोडो नीचे आओ, तनाव थकान से निजात पाओ
प्राणायाम भी है जरूरी, योग से उर्जा मिलेगी पूरी
अब दिन–भर के लिए तुम हो जाओ तैयार, फल खाना भी रखना याद
कभी केले तो कभी संतरे, अंगूर, जामून मिले तो लेले
सभी रंग की साग सब्जियां, अपने भोजन में शामिल करले
अपने कार्य को मानो पूजा, पूर्ण भाव से करलो पूरा
बीच–बीच में उठकर घूमो, दोंस्तों से जाके मिल लो
इससे बढ़ेगी तुम्हारी चेतना, काम में मन लगेगा दुगुना
दिन में काम सारा करलो, शाम में खेलो–घूमो ताल मिला लो
रात को खाना हल्का खाओ, बाहर फिर तुम घुमने जाओ
अच्छी नींद है बहुत जरूरी, आठ घंटे की करलो पूरी
जीवन जीने का यही तरीका, मंत्र है स्वस्थ जीवन का

मोबाइल–माँ

पूनम भास्कर सिंहमार
वैज्ञानिक 'ई'

खुश था मैं, पृथ्वी लोक जाने को
आज किसी माँ की कोख में जन्म लेने को
माँ की ममता, पिता का प्यार न्योछावर होने वाला था
एक नई दुनिया का सफर मैं करने वाला था

वो दिन आया, मैंने जन्म लिया
लोगों की पहली नजर को मुझपर न पाकर
किसी ओर चीज पर पाया
मेरे चेहरे के सामने वह चीज आई
एक रोशनी निकली और मैं मुस्कुराया

फिर माँ ने मुझे गोद में उठाया
मैंने भी माँ पर अपना प्यार लुटाया
कुछ दिन बीते थे
अजीब–सा माहौल मैंने आस–पास पाया
माता–पिता और अन्य को उसी चीज पर व्यस्त पाया
लेटे–लेटे सोचता रहा, ये कैसी है माया
जिसके वश में हर एक को मैंने खोया पाया

तन्हा–तन्हा सा रहने लगा मैं
जोर–जोर से रोने लगा मैं
खाना–पीना छोड़ बिमार रहने लगा मैं
बुझा–बुझा सा रहने लगा मैं
दुर्दशा देख मेरी किसी को कुछ समझ न आया
न जाने क्यों उस चीज को फिर मेरे हाथों में थमाया

नन्हें–नन्हें हाथों से मैंने उसे चलाया
पिता ये देख मंद–मंद मुस्कुराया

अचानक एक गाना चला, मैं चुप हो गया
इतनी मधुर आवाज थी, मैं मंत्रमुग्ध हो गया
आज मैं पहली बार चैन से सोया
यही मेरी माता है दिल को ये समझाया

माता, पिता भी खुश थे, चैन की सांस ले रहे थे
मानो उनको ऐसा यंत्र मिल गया
बच्चे की समस्या का पूर्ण समाधान मिला गया

मुझे व्यस्त रखना है, तो मोबाइल दे दिया
मैं रो रहाँ हूँ, गोदी के स्थान पर मोबाइल दे दिया
अब तो खाना भी मोबाइल बिन खाया नहीं जाता
अब तो मोबाइल बिना जीया नहीं जाता

मैं उस मोबाइल को मोबाइल माँ कहने लगा
एक अटूट–सा रिश्ता हमारे बीच बनने लगा
जैसे–जैसे मैं बड़ा हुआ
माँ से ज्यादा मोबाइल माँ के करीब हुआ

हाथों में मोबाइल माँ, कानों में लीड
यही जिन्दगी का आधार बना
माँ से ज्यादा मैं, मोबाइल माँ के करीब हुआ
माता–पिता को पता न चला कब मैं उनसे दूर हो गया
और जब पता चला, मैं मोबाइल माँ का हो गया।

पिता की नसीहत

नैतिक चौहान
सुपुत्र कपीश कुमार

एक बहुत दौलतमंद व्यक्ति ने अपने बेटे को वसीयत देते हुए कहा, बेटा मेरे मरने के बाद मेरे पैरों में ये फटे हुए मोजे पहना देना, मेरी यह आखरी इच्छा जरूर पूरी करना। पिता के मरते हुए पिता को नहलाने के बाद बेटे ने पण्डित जी से पिता की आखरी इच्छा के बारे में बताया। पण्डित जी ने कहा, हमारे धर्म में कुछ भी पहनाने की इजाजत नहीं है। पर बेटे की जिद थी कि पिता की आखिरी इच्छा जरूर पूरी करनी चाहिए। बहस इतनी बढ़ गई कि शहर के पंडितों को जमा किया गया लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। इसी मोहल्ले में से एक व्यक्ति आया और आकर बेटे के हाथों में पिता का लिखा हुआ खत दिया जिसमें पिता की नसीहत लिखी थी।

"मेरे प्यारे बेटे"

देख रहे हो दौलत बंगला गाड़ी और बड़ी–बड़ी फैन्सी और फार्म हाऊस के बाद भी मैं एक फटा हुआ मोजा तक नहीं ले जा सकता। एक रोज तुम्हें भी मृत्यु आएगी होशियार हो जाओ, तुम्हें भी सफेद कपड़े में ही जाना पड़ेगा। लिहाजा कोशिश करना, पैसों के लिए किसी को दुख मत देना, गलत तरीके से पैसा मत कमाना, धन को धर्म के कार्य में ही लगाना।

कलाकृतियाँ

रूद्र (सुपुत्र श्री सृष्टि देव सिन्हा)

सायेशा (सुपुत्री श्रीमती मान्या कुलश्रेष्ठ)

सायेशा (सुपुत्री श्रीमती मान्या कुलश्रेष्ठ)

रूद्र (सुपुत्र श्री सृष्टि देव सिन्हा)

रूद्र (सुपुत्र श्री सृष्टि देव सिन्हा)

जगतार (अग्रज डॉ सुखजीत सिंह)

रेयांश (श्री सुपुत्र प्रणव कुमार)

संदीप्ता (सुपुत्री श्री संजय सिंह)

आध्या (सुपुत्री श्रीमती नेहा अग्रवाल)

संदीप्ता (सुपुत्री श्री संजय सिंह)

ज्योत्स्ना (भतीजी डॉ सुखजीत सिंह)

अगमजोत (भतीजा डॉ सुखजीत सिंह)

राजभाषा गतिविधियां

संस्थान, राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति सजग एवं प्रतिबद्ध है। हिंदी में कार्य करने के लिए निर्धारित सभी अनुभाग दैनिक रूप से प्रशासनिक कार्य हिंदी में कर रहे हैं। 80 प्रतिशत से अधिक कार्मिकों को हिंदी का ज्ञान होने के कारण संस्थान राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत पहले से ही अधिसूचित है। हिंदी में बेहतर कार्यान्वयन के दृष्टिकोण से जांच बिंदु जारी किए गए हैं तथा हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों को व्यक्तिशः आदेश जारी किए गए हैं।

2. प्रत्येक वर्ष गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम प्राप्त होता है। इसमें निर्दिष्ट लक्ष्यों को दैनिक आदेश में जारी किया गया है। राजभाषा गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने के दृष्टिकोण से डिजिटल डिस्प्ले एवं स्थानीय नेटवर्क ईसानेट का प्रयोग किया जा रहा है।

3. प्रत्येक तिमाही में एक कार्यशाला और एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाती हैं। संस्थान, 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का सदस्य है जिसकी वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। 10वीं छमाही बैठक दिनांक 16.11.2023 को एपी शिंदे सभागार, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर देव प्रकाश शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित हुई जिसमें निदेशक महोदय उपस्थित रहे।

4. वर्ष 2023 के दौरान आयोजित हिंदी कार्यशालाओं, बैठकों और हिंदी दिवस/पखवाड़े आदि का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इनका विवरण इस प्रकार हैः

1. हिंदी कार्यशालाएं

दिनांक	कार्यशाला विषय	वक्ता
26 जून 2023	हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन	श्रीमती आशा त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'जी', डीआरडीओ मुख्यालय
25 अगस्त 2023	सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा एवं वार्षिक कार्यक्रम	श्री सुजीत कुमार मेहता सहायक निदेशक, राजभाषा मुख्यालय
22 दिसंबर 2023	हिंदी तकनीकी रिपोर्ट लेखन	श्रीमती रमिता सरदाना, वैज्ञानिक 'ई', ईसा
07 फरवरी 2024	प्रसन्नचित जीवन में अध्यात्म का महत्व	श्री भारतेन्दु नंदन, वैज्ञानिक 'एफ', एस ए जी

वक्ता अपने विचार रखते हुए

एक-दिवसीय कार्यशाला में आमंत्रित वक्ता को सम्मान

2. बैठकें

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें दिनांक 28 जून 2023, 27 सितम्बर 2023 तथा 22 दिसंबर 2023 को आयोजित की गईं।

3. हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़ा

इस इस वर्ष भी हिन्दी दिवस का शुभारंभ दिनांक 14-15 सितम्बर 2023 के दौरान पुणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से हुआ जिसमें ईसा संस्थान की ओर से राजभाषा अधिकारी श्रीमती पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई' एवं सह-राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी' ने भाग लिया। संस्थान में दिनांक 18-29 सितंबर 2023 के दौरान हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया एवं समापन 09 अक्तूबर 2023 को किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जिसमें नोटिंग व ड्राफ्टिंग, अनुवाद (हिंदीतर वर्ग सहित), टंकण प्रतियोगिताओं को डीआरडीएस व डीआरटीसी वर्ग और प्रशासन एवं सम्बद्ध वर्ग में विभाजित किया गया। साथ ही हिंदी श्रुतलेख व सुलेख प्रतियोगिता के अंतर्गत हिन्दी भाषी, हिंदीतर भाषी और एमटीएस व एएलएस कार्मिकों को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष श्रेणी का प्रावधान करते हुए प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त निबंध, वाद-विवाद, कविता-पाठ, आशु भाषण, मुखपृष्ठ डिज़ाइन, अंत्याक्षरी और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस वर्ष राजभाषा प्रभाग की ओर से पखवाड़े में एक नवीन प्रतियोगिता वर्ग पहेली और तकनीकी शोध लेख प्रतियोगिता को सम्मिलित किया गया जिसमें अधिकाधिक कार्मिकों ने अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की। इन सभी प्रतियोगिताओं में वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

निर्णायक को सम्मानित करते हुए

पखवाड़े में प्रतिभागी पुरस्कार ग्रहण करते हुए

हिन्दी पखवाड़ा : प्रतियोगिता परिणाम

1. वाद-विवाद		2. निबन्ध	
प्रथम	सुश्री नेहल पांडेय, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'	प्रथम	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
द्वितीय	श्री अनुराग पाठक, वैज्ञानिक 'ई'	द्वितीय	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
तृतीय	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'	तृतीय	श्री साहिल, तकनीशियन 'ए'
सांत्वना	श्रीमती नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'डी'	सांत्वना	श्री मुकेश चन्द्र गुर्जर, वाहन परिचालक 'बी'
सांत्वना	श्रीमती अंजु मित्तल, भंडार सहायक 'ए'	सांत्वना	श्री विशाल अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'

3. तकनीकी लेख	
प्रथम	श्री सयैद फिरोज जैनवी, वैज्ञानिक 'एफ'
द्वितीय	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
तृतीय	श्री ईश्वर सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी'
सांत्वना	श्री कुलदीप दहपिया, प्रशासनिक सहायक 'बी'
सांत्वना	श्री रोबिन गिरसा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
4. मुख-पृष्ठ डिजाइन	
प्रथम	श्री राजकुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
द्वितीय	श्रीमती अभिलाषा कुमारी, तकनीकी अधिकारी 'ए'
तृतीय	श्री विशाल अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
सांत्वना	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
सांत्वना	श्री ईश्वर सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी'
5. वर्ग पहेली	
प्रथम	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
द्वितीय	श्रीमती लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
तृतीय	श्रीमती पूजा पाण्डेय,तकनीकी अधिकारी 'बी'
सांत्वना	सुश्री रेखा रानी, तकनीकी अधिकारी 'बी'
सांत्वना	श्रीमती अभिलाषा कुमारी, तकनीकी अधिकारी 'ए'
6. श्रुत-लेख (हिन्दी-भाषी श्रेणी)	
प्रथम	श्री इच्छा शंकर शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ'
द्वितीय	श्री मुहम्मद इब्राहिम, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
तृतीय	श्री कुलदीप दहपिया, प्रशासनिक सहायक 'बी'
सांत्वना	श्रीमती तजिंदर कौर, निजी सचिव
सांत्वना	श्री जयशंकर कुमार, वैज्ञानिक 'एफ'
6 (ii) श्रुत-लेख (हिन्दीतर भाषी श्रेणी)	
प्रथम	डॉ. सुमन्त कुमार दास, वैज्ञानिक 'एफ'
द्वितीय	श्रीमती डोरोथी थंगनेहोई, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
तृतीय	श्री कृषाणु रे, वैज्ञानिक 'एफ'
6 (iii) श्रुत-लेख (विशेष प्रतिभागी श्रेणी)	
प्रथम	श्री मुकेश चन्द्र गुर्जर, वाहन परिचालक 'बी'
द्वितीय	श्रीमती अर्चना चौहान, एमटीएस
तृतीय	श्री कपीश कुमार, वाहन परिचालक 'सी'
7. अनुवाद (हिन्दी भाषी श्रेणी)	
प्रथम	सुश्री स्वीटी, तकनीशियन 'ए'
द्वितीय	श्री रोबिन गिरसा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
तृतीय	श्रीमती आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
सांत्वना	श्री कुलदीप दहपिया, प्रशासनिक सहायक 'बी'
सांत्वना	श्री नीरज कुमार, वाहन परिचालक 'ए'
7 (ii) अनुवाद (हिन्दीतर भाषी श्रेणी)	
प्रथम	श्रीमती डोरोथी थंगनेहोई, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
द्वितीय	डॉ. सुमन्त कुमार दास, वैज्ञानिक 'एफ'
तृतीय	श्री कृषाणु रे, वैज्ञानिक 'एफ'
8. नोटिंग-ड्राफ्टिंग (प्रशासन एवं संबंधी श्रेणी)	
प्रथम	श्री नीरज कुमार, प्रशासनिक सहायक 'बी'
द्वितीय	श्रीमती अंजु मित्तल, भंडार सहायक 'ए'
तृतीय	श्री कुलदीप दहपिया, प्रशासनिक सहायक 'बी'
सांत्वना	श्रीमती आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
सांत्वना	श्रीमती अर्चना चौहान, एमटीएस
8 (ii) नोटिंग-ड्राफ्टिंग (डीआरडीएस एवं डीआरटीसी श्रेणी)	
प्रथम	श्री राकेश कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'
द्वितीय	श्रीमती अभिलाषा कुमारी, तकनीकी अधिकारी 'ए'
तृतीय	श्री ललन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'
सांत्वना	सुश्री स्वीटी, तकनीशियन 'ए'
सांत्वना	श्रीमती रेखा बिन्दु, तकनीकी अधिकारी 'सी'
9 (i) टंकण (प्रशासन एवं संबंधी)	
प्रथम	श्री कुलदीप दहपिया, प्रशासनिक सहायक 'बी'
द्वितीय	श्री जय प्रकाश, प्रशासनिक सहायक 'ए'
तृतीय	श्रीमती डैजी चतुर्वेदी, प्रशासनिक सहायक 'बी'
सांत्वना	श्रीमती तजिन्दर कौर, निजी सचिव
सांत्वना	श्रीमती आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
9 (ii) टंकण (डीआरडीएस एवं डीआरटीसी श्रेणी)	
प्रथम	श्री अमित कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'
द्वितीय	श्रीमती लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
तृतीय	श्री रोबिन गिरसा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
सांत्वना	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
सांत्वना	सुश्री स्वीटी, तकनीशियन 'ए'
10. कविता पाठ	
प्रथम	श्रीमती नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'डी'
द्वितीय	श्रीमती कल्पना कैथल, वैज्ञानिक 'ई'
तृतीय	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'

तृतीय	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
सांत्वना	श्री सयैद मो. आरिफ अशरफ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
सांत्वना	श्री प्रणव कुमार, वैज्ञानिक 'ई'
11. चित्र आधारित कहानी लेखन	
प्रथम	श्रीमती पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई'
द्वितीय	सुश्री स्वीटी, तकनीशियन 'ए'
तृतीय	श्री आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
सांत्वना	श्री दिनेश कुमार मीना, वैज्ञानिक 'एफ'
सांत्वना	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
12. आशु भाषण	
प्रथम	श्री विशाल अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
द्वितीय	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
तृतीय	श्री दिनेश कुमार मीना, वैज्ञानिक 'एफ'
सांत्वना	श्री गौरव गुप्ता, वैज्ञानिक 'ई'
सांत्वना	श्री आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
13. अंत्याक्षरी	
प्रथम	श्रीमती प्रतिभा सिंह जायसवाल, वैज्ञानिक 'ई'
	श्रीमती रमिता सरदाना, वैज्ञानिक 'ई'
	श्रीमती अभिलाषा कुमारी, तकनीकी अधिकारी 'ए'
	सुश्री रेखा रानी, तकनीकी अधिकारी 'बी'
	श्री ललन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'
	श्री राकेश कमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'

द्वितीय	श्री देवाशीष बैनर्जी, वैज्ञानिक 'जी'
	श्रीमती लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
	श्रीमती शुभी सैनी, वैज्ञानिक 'डी'
	श्री सुमेश कुमार, प्रशासनिक अधिकारी
	श्रीमती डैजी चतुर्वेदी, प्रशासनिक सहायक 'बी'
तृतीय	श्रीमती दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'ए'
	सुश्री नेहल पांडेय, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
	श्रीमती अर्चना चौहान, एमटीएस
	श्रीमती आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
	श्री मोहन लाल, भंडार सहायक 'ए'
विश्लेषिका में लेख लिखने हेतु पुरस्कार	
श्री प्रवीन जैन, वैज्ञानिक 'डी' (संयुक्त)	
श्रीमती पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई'	
श्री संजीव कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'	
श्री दीपक कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'	
श्री नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी' (संयुक्त)	
श्रीमती तजिन्दर कौर, निजी सचिव	

4. **हिंदी संगोष्ठी**

वित्त वर्ष 2023-24 में दिल्ली क्षेत्र-1 के अंतर्गत अखिल भारतीय संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी के आयोजन का मुख्य उत्तरदायित्व 'पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान' (ईसा) को दिया गया है। यह संगोष्ठी दिनांक 07-08 दिसम्बर 2023 को आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ उपेंद्र कुमार सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (जैव विज्ञान), सम्माननीय अतिथि के रूप में प्रोफेसर निरंजन कुमार, वरिष्ठ प्रोफेसर एवं डीन, प्लानिग, दिल्ली विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया।

इस संगोष्ठी के लिए कुल 63 शोध-पत्र प्राप्त हुए जिन्हें विषयवार 8 सत्रों में विभाजित किया गया। यह शोध-पत्र डेसीडॉक, सेप्टेम, एसएजी, जेसीबी, एसएसपीएल, डीआईपीआर, इनमास, दिल्ली स्थित डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त अन्य कई संस्थाओं जैसे कि एडीआरडीई (आगरा), डीएलआरएल, डीआरडीएल, एएसएल, आरसीआई (हैदराबाद), कैब्स, एलआरडीई (बेंगलुरु), डीएल (जोधपुर), पीएक्सई (चाँदीपुर), आर&डी (ई) (पुणे), आईआरडीई (देहरादून) से प्राप्त हुए। ईसा संस्थान की ओर से 13 शोध-पत्र प्राप्त हुए। इन शोध-पत्रों की प्रस्तुति हेतु इन्हें विषयवार ढंग से 08 भागों में विभाजित किया गया। प्रस्तुति के साथ-साथ इन्हें संकलित करके स्मारिका का विमोचन उदघाटन सत्र में किया गया। ईसा संस्थान की ओर से प्राप्त शोध-लेख निम्नलिखित थे-

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विषय
1	डॉ सुजाता दास एवं श्री आनंद प्रकाश	वैज्ञानिक 'एफ' एवं वैज्ञानिक 'ई'	आधुनिक युद्धक्षेत्र में जियोईंट (GEOINT) का अनुप्रयोग
2	डॉ विकास कुमार शर्मा	वैज्ञानिक 'एफ'	लक्ष्य निष्प्रभावीकरण के मिसाइल आवंटन समस्या के लिए संख्यात्मक और विश्लेषणात्मक मॉडल
3	श्री विशाल अग्रवाल	वैज्ञानिक 'ई'	राज्बेरी पाई प्लेटफार्म पर ध्वनि सिग्नल द्वारा हवा में टार्गेट की दिशा का पता लगाना
4	श्रीमती रमिता सरदाना	वैज्ञानिक 'ई'	फील्ड डेटा संग्रहण
5	श्रीमती कल्पना कैथल	वज्ञानिक 'ई'	समसामयिक परिदृश्य- ऑटोनोमस अंडरवाटर व्हीकल की महत्ता
6	श्री आनन्द प्रकाश	वैज्ञानिक 'ई'	मानवीय जीवन में कृत्रिम बुद्धिमता का अनुप्रयोग
7	श्री प्रवीन जैन एवं श्री नितिन कुमार	वैज्ञानिक 'डी' एवं तक. अधिकारी बी	डीआरडीओ में एआई की भूमिका और महत्व
8	श्री प्रवीन जैन एवं श्री नितिन कुमार	वैज्ञानिक 'डी' एवं तक. अधिकारी बी	डीआरडीओ में एआई की भूमिका और महत्व
9	सुश्री नेहल पाण्डेय	वरि. तक. सहा. 'बी'	रक्षा अनुसंधान में भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) का महत्व एवं उपयोग
10	श्री कपीश कुमार	वाहन चालक 'सी'	प्रयोजनमूलक हिंदी का बदलता स्वरुप
11	श्रीमती अंजू मित्तल	भंडार सहायक 'अ'	डिजिटल भारत में साइबर सुरक्षा एवं चुनौतिया
12	सुश्री स्वीटी	तकनीशियन 'ए'	सूचना प्रोद्योगिकी के दौर में हिंदी
13	श्री साहिल	तकनीशियन 'ए'	राजभाषा हिंदी का महत्व

महानुभावों द्वारा स्मारिका का विमोचन

निदेशक महोदय पेपर प्रस्तुतकर्ता को प्रमाण पत्र देते हुए

संगोष्ठी के पहले दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें आकृति ड्रामा सोसाइटी द्वारा 'रूबरू' और सुख मंच द्वारा नाट्य प्रस्तुतियां दी गई। इन दोनों प्रस्तुतियों ने सामाजिक समस्याओं को रेखांकित करते हुए बड़े ही रोचक और मनोरंजन ढंग से संदेश का प्रेषण किया। संगोष्ठी के इस कार्यक्रम के उपरांत सभी के लिए रात्रिभोज की व्यवस्था की गई।

द्वितीय दिन शेष सत्रों का संचालन अत्यंत सफलतापूर्वक किया गया। सत्र पूर्णता के पश्चात सभी शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। संगोष्ठी के प्रत्येक सत्र में सर्वश्रेष्ठ शोध-पत्र प्रस्तुति के प्रस्तुतकर्ता को भी प्रमाण-पत्र और स्मृति चिह्न देकर निदेशक महोदय ने सम्मानित किया।

अंत में श्री देवाशीष बैनर्जी, वैज्ञानिक 'जी' एवं अध्यक्ष, समन्वय समिति ने सहयोगी प्रयोगशालाओं के निदेशकगण, शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं, समिति सदस्यों और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया।

5. हिंदी प्रोत्साहन योजना

वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने तथा अधिकारियों द्वारा हिंदी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) देने के लिए नीचे दिये गए विवरण के अनुसार पुरस्कार प्राप्त किए:-

सरकारी कामकाज (टिप्पणी एवं आलेखन) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए

	नाम	पदनाम
प्रथम (02)	श्री जय प्रकाश	प्रशासनिक सहायक 'ए'
	श्री कुलदीप दहपिया	प्रशासनिक सहायक 'बी'
द्वितीय (03)	श्रीमती अर्चना चौहान	एम टी एस
	श्री सुनील कुमार	प्रशासनिक सहायक 'बी'
	श्री रॉबिन गिरसा	वरि. तकनीकी सहायक 'बी'
तृतीय (05)	श्रीमती आरती शर्मा	लेखा अधिकारी
	श्री आनंद प्रकाश	वैज्ञानिक 'ई'
	श्री पीतांबर सिंह	वरि. प्रशासनिक सहायक
	श्रीमती लीला चौहान	तकनीकी अधिकारी 'ए'
	श्री अमित कुमार	तकनीकी अधिकारी 'ए'
अधिकारियों द्वारा हिंदी में श्रुतलेख (डिक्टेशन देने के लिए)		
1	डॉ. सुजाता दास	वैज्ञानिक 'एफ'
2	श्री सुमेश कुमार	प्रशासनिक अधिकारी

6. हिंदी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका'

महिला दिवस के अवसर पर निदेशक महोदय के कर-कमलों द्वारा संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के अंक 22 का विमोचन किया गया।

7. विविध कार्य

हिंदी गतिविधियों के अंतर्गत समय-समय पर अन्य अनुभागों द्वारा प्राप्त मूल अंग्रेजी विषयवस्तु / सामग्री का हिंदी में अनुवाद किया गया। कंप्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने के लिए आवश्यक टूल मंगल फांट उपलब्ध कराए गए हैं।

मुख्य-पृष्ठ डिजाइन प्रतियोगिता

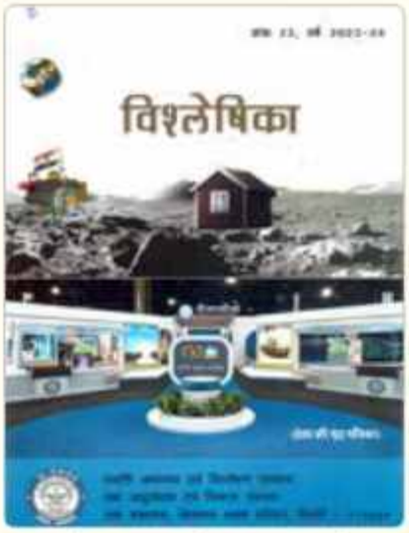

श्री राजकुमार, वरि. तक. सहा. 'बी'

श्री आनन्द प्रकाश, वै. 'ई'

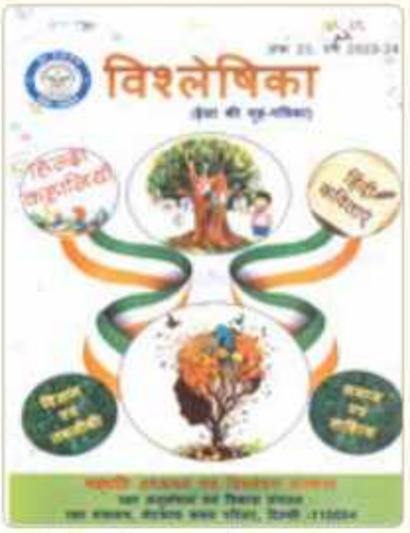

श्रीमती अभिलाषा कुमारी, तक. अधि. 'ए'

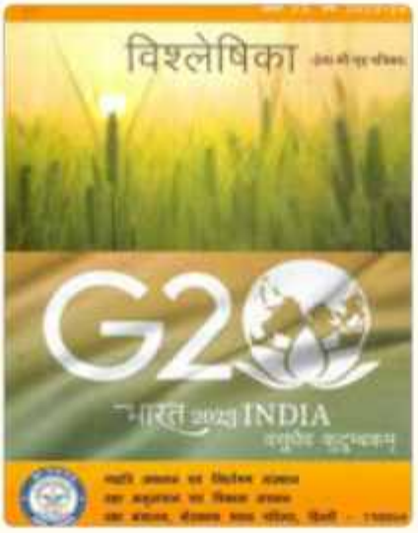

श्री ईश्वर सिंह, तक. अधि. 'बी'

श्री विशाल अग्रवाल, वै. 'ई'

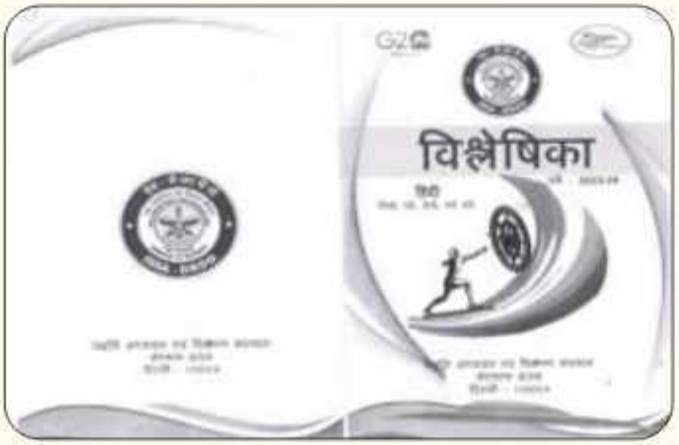

श्री राकेश कुमार, तक. अधि. 'बी'

मानव संसाधन विकास रिपोर्ट

संस्थान में कार्यरत सभी कार्मिकों को प्रोत्साहित कर उनकी प्रतिभा को उभारने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए संस्थान में मानव संसाधन विकास अनुभाग सक्रिय रूप से अपने जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहा है। वार्षिक प्रशिक्षण तथा परियोजनाओं को ध्यान में रखते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है। यह एक निरंतर प्रक्रिया है। विभाग का यह प्रयास होता है कि अधिक से अधिक कार्मिकों को प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए। उत्तम कार्य निष्पादन करने वाले कार्मिकों के लिए पुरस्कार का भी प्रावधान है।

1.संस्थान द्वारा आयोजित सी.ई.पी

क्र.सं.	सी.ई.पी शीर्षक	अवधि	प्रतिभागी	कोर्स समन्वयक
01	Sensor System Analysis and Modelling	13–15 दिसंबर 2023	19	श्री प्रणव कुमार, वैज्ञानिक 'ई'

2.राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

व्याख्यान शीर्षक	वक्ता	आयोजन दिनांक
A Numerical Simulation Approach for Predicting Lethality of Underwater Warhead Due to Explosion	श्री संकल्प शर्मा, वैज्ञानिक 'ई'	28 फरवरी 2023

3.राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस:

व्याख्यान शीर्षक	वक्ता	आयोजन दिनांक
Different mathematical approaches for estimation of COVID-19 spread in India	डॉ. विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'ई'	11 मई 2023

4. विभिन्न विश्वविद्यालय एवं संस्थान से बी.टेक. एम.एस.सी., एम.सी.ए. छात्र/छात्रों का प्रशिक्षण –**124**

5. वर्ष 2023 के दौरान पदोन्नत/नियुक्ति/त्यागपत्र/स्थानान्तरण/सेवानिवृत्ति वाले अधिकारी

- पदोन्नतियां: डीआरडीएस, डीआरटीसी/प्रशासन एवं संबद्ध श्रेणी

क्र.सं.	अधिकारी का नाम	कौन से पद से	कौन से पद पर
		डीआरडीएस	
01	डॉ ए. के. घमीजा	वैज्ञानिक 'एफ'	वैज्ञानिक 'जी'
02	श्री एच. एस. भारती	वैज्ञानिक 'एफ'	वैज्ञानिक 'जी'
03	डॉ. वी. जी. पाटिल	वैज्ञानिक 'एफ'	वैज्ञानिक 'जी'
04	श्री सौरभ जायसवाल	वैज्ञानिक 'ई'	वैज्ञानिक 'एफ'
05	श्री विवेक कुमार शर्मा	वैज्ञानिक 'ई'	वैज्ञानिक 'एफ'
06	श्री सुधाकर कुमार	वैज्ञानिक 'ई'	वैज्ञानिक 'एफ'
07	डॉ. विकास कुमार शर्मा	वैज्ञानिक 'ई'	वैज्ञानिक 'एफ'
08	श्री चक्रवर्ती कुमार सिंह	वैज्ञानिक 'डी'	वैज्ञानिक 'ई'
09	श्री सुरेश कुमार	वैज्ञानिक 'डी'	वैज्ञानिक 'ई'
10	श्री महेन्द्र प्रताप सिंह	वैज्ञानिक 'डी'	वैज्ञानिक 'ई'
11	श्री आनंद प्रकाश	वैज्ञानिक 'डी'	वैज्ञानिक 'ई'

डीआरटीसी			
01	श्रीमती सरिता सिंह	तक. अधि. 'ए'	तक. अधि. 'बी'
02	श्रीमती अभिलाषा कुमारी	वरि. तक. सहा. 'बी'	तक. अधि. 'ए'
03	श्री दिपेश कुमार ज्ञानी	वरि. तक. सहा. 'बी'	तक. अधि. 'ए'
04	श्री सुनील कुमार यादव	वरि. तक. सहा. 'बी'	तक. अधि. 'ए'
05	श्री अंकित सिंह	तकनिशीयन 'ए'	तकनिशीयन 'बी'
प्रशासन एवं संबद्ध			
01	श्री लोकेश	सुरक्षा सहायक 'ए'	सुरक्षा सहायक 'बी'
02	श्री मोहन लाल	एम.टी.एस	भंडार सहायक 'ए'
03	श्री सुनील कुमार	प्रशासनिक सहायक 'बी'	वरि. प्रशासनिक सहायक
04	श्री पवन कुमार	भंडार सहायक 'बी'	वरि. भंडार सहायक
05	श्री प्रवीन भल्ला	ए.एल.एस–II	ए.एल.एस–I

वर्ष 2023 में ईसा में स्थानांतरण				
01	डॉ. ए. के. धमीजा	वैज्ञानिक 'एफ'	डी.आई.पी.आर. दिल्ली	09.02.2023
02	श्री विक्रम दत्त	वाहन परिचालक 'ए'	डी.एम.एस, डीआरडीओ भवन, दिल्ली	28.02.2023
03	श्रीमती नीलन भाटिया	वरि.निजी सचिव	ईनमास, दिल्ली	01.03.2023
04	श्री सुरेन्द सिंह रावत	प्रशासनिक अधिकारी	ना.सं.वि निदेशालय, मुख्यालय, दिल्ली	22.03.2023
05	श्रीमती अभिलाष कुमारी	वरि.तक. सहा. 'बी'	ए.डी.आर.डी.ई, आगरा	03.04.2023
06	डॉ. सुजाता दास	वैज्ञानिक 'एफ'	डी.जी.आर.ई, चंडीगढ़	12.06.2023
07	श्रीमती सुचित्रा चौधरी	वैज्ञानिक 'ई'	सेप्टेम, दिल्ली	04.07.2023
08	श्रीमती नंदी शर्मा	लेखाकार	एस.एस.पी.एल, दिल्ली	23.11.2023

वर्ष 2023 में नये कार्यग्रहण			
01	श्रीमती पूजा	वैज्ञानिक 'बी'	13.06.2023
02	श्री अमित कुमार	वैज्ञानिक 'बी'	17.10.2023
03	श्रीमती चित्रा कुशवाहा	वैज्ञानिक 'बी'	19.10.2023
04	श्री ऑगनीव दास गुप्ता	वैज्ञानिक 'बी'	26.10.2023
05	श्री आनंद कुमार सिंह	वरि. तक. सहा. 'बी'	10.04.2023
06	श्री राजकुमार	वरि. तक. सहा. 'बी'	23.03.2023
07	श्री साहिल	तकनिशियन 'ए'	20.06.2023
08	सुश्री स्वीटी	तकनिशियन 'ए'	28.06.2023
09	श्री रोबिन	प्रशा. सहा. 'ए'	06.12.2023
10	श्री भावुक	प्रशा. सहा. 'ए'	07.12.2023
11	श्री विक्की गुर्जर	प्रशा. सहा. 'ए'	18.12.2023
12	श्री संदीप कुमार सिंह	प्रशा. सहा. 'ए'	20.12.2023
13	श्री दीपक कुमार	सुरक्षा सहा. 'ए'	18.10.2023
14	कु. सलोनी	वरि. तक. सहा. 'बी'	28.03.2023

वर्ष 2023 में ईसा से स्थानांतरण

क्र.सं.	अधिकारी का नाम	पद	कहाँ पर	स्थानातरण दिनांक
01	श्री नीरज कुमार	प्रशासनिक सहायक 'बी'	टी.बी.आर.एल, चंडीगढ़	23.11.2023
02	श्रीमती अंजू मित्तल	भंडार सहायक 'ए'	सेप्टेम, दिल्ली	21.11.2023
03	श्री नीरज	वाहन परिचालक 'ए'	सी.सी.ई (आर&डी), चंडीगढ	15.12.2023
04	श्री मोहित राणा	वाहन परिचालक 'ए'	आई.आर.डी.ई, देहरादून	15.12.2023

वर्ष 2023 में ईसा से त्यागपत्र

क्र.स.	अधिकारी का नाम	पद	त्यागपत्र
01	श्री अंबादत्त मिश्रा	वरि. तक. सहा. 'बी'	18.08.2023
02	श्री सैयद मो. आरिफ अशरफ	तक. अधि. 'बी'	30.11.2023
03	श्री रोशन शेख	भंडार सहायक 'बी'	08.12.2023
04	कु. सलोनी	वरि. तक. सहा. 'बी'	18.04.2023

वर्ष 2023 में सेवानिवृति

क्र.स.	अधिकारी का नाम	पद	सेवानिवृति
01	श्री उदय कुमार	वैज्ञानिक 'एफ'	31.01.2023
02	श्री एच एस भारती	वैज्ञानिक 'जी'	30.11.2023

- **वर्ष 2023 में तकनीकी /प्रबंधकीय कोर्स में हिस्सा :**

क्र.सं.	तकनीकी /प्रबंधकीय कोर्स में भागीदारी की संख्या
01	**डी.आर.डी.एस : 74**
02	**डी.आर.टी.एस : 17**
03	**प्रशासनिक एवं संबद्ध : 19**

- **शोध–पत्र प्रकाशन**

क्र.सं.	शोध–पत्र के शीर्षक	लेखक के नाम एवं पदनाम	जर्नल/कॉन्फ्रेंस
01	Comparative Analysis of PSO Techniques for Artillery Deployment in Constructive Simulation	श्री एस. बी. तनेजा, वैज्ञानिक 'एच', श्री संजय बिष्ट, वैज्ञानिक 'एफ' एवं श्री गौतम चन्द्र ब्रह्मा, वैज्ञानिक 'ई'	4th Congress on Intelligent System, 04-05 Sep 2023
02	APSO based automated planning in Constructive Simulation	श्री संजय बिष्ट, वैज्ञानिक 'एफ' एवं श्री एस. बी. तनेजा, वैज्ञानिक 'एच'	ACM Conference, JIIT Noida, 03-05 Aug. 2023
03	APSO based automated planning in constructive simulation	श्री संजय बिष्ट, वैज्ञानिक 'एफ' एवं श्री एस. बी. तनेजा, वैज्ञानिक 'एच'	Academic Journal & Technical Conferences

खेल–कूद संबंधी गतिविधियां

'ईसा स्थापना दिवस' के अवसर पर खेल-कूद संबंधी गतिविधियां

ईसा ने 22 सितम्बर 2023 को स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न खेल-कूद गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें ईसा के कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पुरुष और महिला दोनों श्रेणियों में कुल 11 खेल-कूद गतिविधियों का आयोजन किया गया। प्रत्येक खेल के विजेता और उप-विजेता को पुरस्कार से सम्मानित किया गया पुरस्कार की कुल संख्या 39 थी। इन गतिविधियों के सुचारू आयोजन हेतु 7 समन्वयकों ने सक्रिय भूमिका निभाई परिणामस्वरूप उन्हें भी सम्मानित किया गया।

खेल-कूद (पुरुष श्रेणी) 2023		
खेल	विजेता	उप-विजेता
केरम	श्री मुहम्मद इब्राहिम	श्री कमल सिंह
शतरंज	डॉ सुखजीत सिंह	डॉ विकाश कुमार शर्मा
बैडमिंटन	श्री जय शंकर कुमार	श्री नीरज
बॉल इन द बास्केट	श्री शुभम	श्री ऋषभ डोगरा
डार्ट	श्री मोहम्मद आफताब	श्री मोहित राणा
हिट द स्टम्प	श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव	श्री नीरज कुमार
क्रिकेट	श्री सुधाकर कुमार (कप्तान)	
	श्री कुलदीप दहपिया (मैन ऑफ द मैच)	
वॉलीबॉल	श्री कपीश कुमार (कप्तान)	श्री रॉबिन गिरसा (कप्तान)
खेल-कूद (महिला श्रेणी) 2023		
खेल	विजेता	उप-विजता
केरम	श्रीमती सविता चावला	श्रीमती लीला चौहान
शतरंज	श्रीमती दीपिका शर्मा	श्रीमती निधि अरोड़ा करीं
म्यूज़िकल चेयर	श्रीमती सविता चावला	श्रीमती लीला चौहान
बॉल इन द बकेट	सुश्री रेखा रानी	श्रीमती नेहा अग्रवाल
रस्सा कूदना	श्रीमती लीला चौहान	सुश्री स्वीटी
डार्ट	श्रीमती नेहा अग्रवाल	श्रीमती अभिलाषा कुमारी

समन्वयक	
श्री विशाल अग्रवाल	श्रीमती लीला चौहान
श्री सुधाकर कुमार	श्रीमती नेहा अग्रवाल
श्री मुहम्मद इब्राहिम	श्री अमित कुमार
श्री आनंद प्रकाश	
प्रतिभागी पुरस्कार	
श्री अंकित सिंह	श्रीमती अर्चना चौहान
श्री मुकेश गुर्जर	श्रीमती अंजु मित्तल

डीआरडीओ नॉर्थ जॉन क्रिकेट टूर्नामेंट

डीआरडीओ नॉर्थ जॉन क्रिकेट टूर्नामेंट के लिए सीफ़ीस द्वारा संयुक्त रूप से बनाई गई टीम में ईसा संस्थान की ओर से श्री लोकेश कुमार, सुरक्षा सहायक 'बी' टीम का हिस्सा बने।

डीआरडीओ नॉर्थ जॉन शतरंज टूर्नामेंट

ईसा संस्थान ने एसएसपीएल, दिल्ली द्वारा दिनांक 26-28 दिसम्बर 2023 को आयोजित डीआरडीओ नॉर्थ जॉन शतरंज प्रतियोगिता में भाग लिया जिसकी टीम चैम्पियनशिप श्रेणी में ईसा ने प्रथम स्थान हासिल किया और ओपन सिंगल मैन प्रतियोगिता में संस्थान के डॉ सुखजीत सिंह, क. अनुवाद अधिकारी विजेता रहे।

संयुक्त राजभाषा संगोष्ठी

राजभाषा गतिविधियां

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान की गतिविधियां

राजभाषा कार्यान्वयन समिति-सदस्य

श्री शशि भूषण तनेजा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ईसा, अध्यक्ष (रा.का.समिति)
श्री देवाशीष बैनर्जी, वैज्ञानिक 'जी' एवं उपाध्यक्ष (रा.का.समिति)
श्रीमती पूनम भास्कर सिंहमार, वैज्ञानिक 'ई' एवं राजभाषा अधिकारी
श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
श्री राजिन्दर कुमार, तकनीकी अधिकारी 'सी'
श्री संजय सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी' एवं सह-राजभाषा अधिकारी
श्रीमती कविता धवन, निजी सचिव
श्री सुरेन्द्र सिंह रावत, प्रशासनिक अधिकारी
श्री दिनेश कुमार, भंडार अधिकारी
श्री अमित कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'
श्रीमती लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
श्रीमती डोरोथी थंगनेहोई, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
सुश्री नेहल पाण्डेय, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
श्री जय प्रकाश, प्रशासनिक सहायक 'ए'
डॉ. सुखजीत सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भविष्य निरूपण

सशस्त्र बलों के वर्तमान तथा भविष्य की चुनौतीपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संस्थान को पद्धति विश्लेषण, मॉडलिंग और रक्षा प्रणालियों के सिमुलेशन आदि क्षेत्र में एक सर्वोत्तम केन्द्र के रूप में विकसित करना।

लक्ष्य

संवेदकों, अस्त्र–शस्त्र, इलेक्ट्रॉनिकीय युद्ध, थल, वायु एवं नौसेना युद्ध, हवाई रक्षा और निर्णय सहायक प्रणाली के क्षेत्र में पद्धति अध्ययन करना और उनके लिए उच्च गुणवत्ता वाले एकीकृत सॉफ्टवेयर विकसित करना तथा इनका उपयोग डीआरडीओ और सेनाओं के लिए डिजाइन, रणनीति विकास, मिशन योजना और प्रशिक्षण में प्रभावी रूप से करना।

पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

रक्षा मंत्रालय, मेटकाफ भवन परिसर, दिल्ली-110054